RNI No. : UPHIN/2023/84344 ₹: 30

प्रेरणा विचार

सितम्बर-2023 (पृष्ठ-36) गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

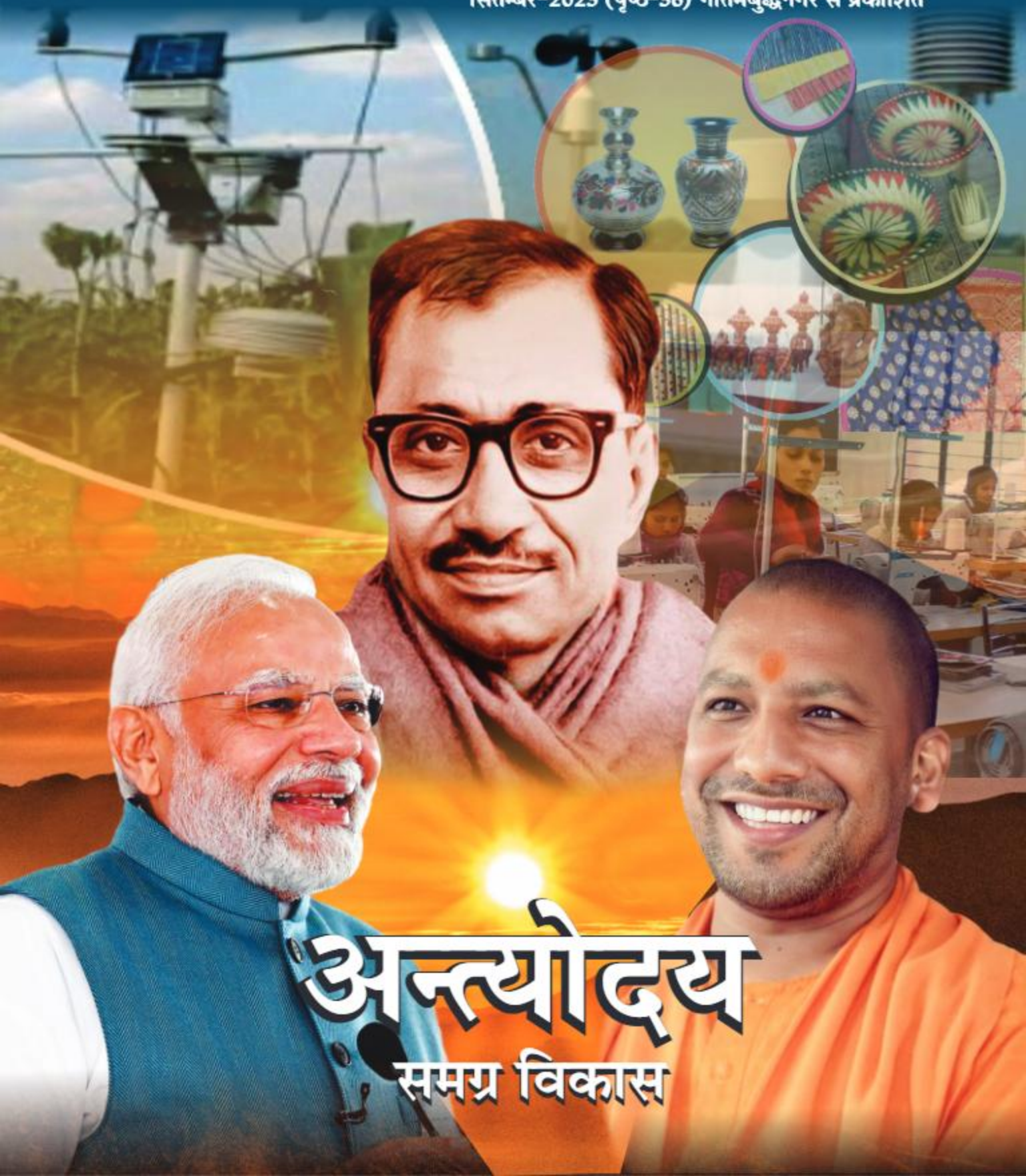

अन्त्योदय

समग्र विकास

सरस्वती शिशु मन्दिर

सी–41, सेक्टर–12, नोएडा (गौतमबुद्ध नगर)

दूरभाष: 0120–4545608

ई–मेल: ssm.noida@gmail.com

वैबसाइड: www.ssmnoida.in

विद्यालय की विशेषताऐं

* भारतीय संस्कृति पर आधारित व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की शिक्षा।
* नवीन तकनीकी शिक्षा प्रोजैक्टर, कम्प्यूटर, सी.सी.टी.वी., कैमरा आदि की सुविधा।
* आर.ओ. का शुद्ध पेय जल, सौर ऊर्जा, विशाल क्रीड़ा स्थल व हरियाली का समुचित प्रबन्ध।
* प्रखर देशभक्ति के संस्कारों से युक्त उत्तम मानवीय व चारित्रिक गुणों के विकास पर बल।
* सामाजिक चेतना एवं समरसता विकास के लिए विविध क्रियाकलाप।
* विद्यालय को श्रेष्ठतम बनाने की दृष्टि से आपके सुझाव सादर आमन्त्रित हैं।

दिनेश गोयल	प्रदीप भारद्वाज	असित त्यागी	प्रकाश वीर
(अध्यक्ष)	(व्यवस्थापक)	(कोषाध्यक्ष)	(प्रधानाचार्य)

प्रेरणा विचार

वर्ष -1, अंक - 9

RNI No. UPHIN/2023/84344

संरक्षक
मधुसूदन दादू

सलाहकार मंडल
श्री श्याम किशोर, डॉ. अनिल निगम
प्रो. (डॉ.) हरेन्द्र सिंह

संपादक
डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया

कार्यकारी संपादक
डॉ. प्रियंका सिंह

प्रबन्ध संपादक
मोनिका चौहान

समन्वयक संपादक
पल्लवी सिंह

अध्यक्ष अणंज कुमार त्यागी की ओर से मुद्रक/प्रकाशक डॉ. अनिल त्यागी द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा प्रेरणा भवन सी-56/20 सेक्टर-62 नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास,
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा
दूरभाष : 0120 4565851,
ईमेल : prernavichar@gmail.com

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा नोएडा की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा।

संपादक

इस अंक में

उत्तर प्रदेश में अन्त्योदय 05

यूपी मिशन शक्ति अभियान से अन्त्योदय 13

माफिया मुक्त उत्तर प्रदेश में सुशासन की बयार 20

संपादकीय.....04
उत्तर प्रदेश के सांस्कृतिक उदय से अन्त्योदय.....07
एक जिला एक उत्पाद से अन्त्योदय.....09
मीडिया को उदासीनता त्यागनी होगी!.....11
उत्तर प्रदेश अंत्योदय से समाजोदय.....16
अन्त्योदय से प्रेरित योगी सरकार.....18
सबका साथ, सबके विकास का विचार लेकर चले थे दीनदयाल जी....22
तथ्यों पर आधारित ज्ञानवापी का सच.....24
इतिहास का सच है गुलाब नबी का कथन.....26
आत्मनिर्भरता से अन्त्योदय.....28
पत्रकारिता जगत में हलचल.....30
क्या आप जानते हैं?.....31
विशेष समाचार 32

अन्त्योदय : समग्र विकास का आधार

पंडित दीनदयाल उपाध्याय, समाज जीवन की अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति के विकास अर्थात् 'अन्त्योदय' को राष्ट्र के समग्र विकास के लिए अनिवार्य मानते थे। उन्होंने एक वर्गहीन, जातिहीन और संघर्ष मुक्त सामाजिक व्यवस्था की कल्पना की थी। अन्त्योदय विचार के अनुसार, किसी देश का समग्र विकास अर्थशास्त्र के आंकड़ों से नहीं अपितु इन तथ्यों से निर्धारित होता है कि, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास रूपी गंगा में समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े विभिन्न वर्गों जैसे पिछड़े, दलितों, आदिवासियों, महिलाओं, विधवाओं, वृद्धजनों, दिव्यांगों, भूमिहीनों, श्रमिकों आदि ने समुचित डुबकियाँ लगा ली हैं अथवा नहीं।

भारतीय संस्कृति, संस्कारों, परंपराओं एवं जीवन मूल्यों पर आधारित राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का विचार सृजित करने वाले पंडित दीनदयाल उपाध्याय, समाज जीवन की अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति के विकास अर्थात् 'अन्त्योदय' को राष्ट्र के समग्र विकास के लिए अनिवार्य मानते थे। उन्होंने एक वर्गहीन, जातिहीन और संघर्ष मुक्त सामाजिक व्यवस्था की कल्पना की थी। अन्त्योदय विचार के अनुसार, किसी देश का समग्र विकास अर्थशास्त्र के आंकड़ों से नहीं अपितु इन तथ्यों से निर्धारित होता है कि, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास रूपी गंगा में समाज की अंतिम पंक्ति में खड़े विभिन्न वर्गों जैसे पिछड़े, दलितों, आदिवासियों, महिलाओं, विधवाओं, वृद्धजनों, दिव्यांगों, भूमिहीनों, श्रमिकों आदि ने समुचित डुबकियाँ लगा ली हैं अथवा नहीं। साथ ही सामाजिक एवं राष्ट्रीय तंत्र, विकास की गंगा का प्रवाह अंतिम पंक्ति के लोगों को डुबकी लगाने के अनुकूल बनाने में सक्रिय है या नहीं। पंडित जी मानते थे कि 'हमें उपरोक्त समस्त वंचित समूहों के लिए काम करना है। ऐसे वंचितों एवं शोषितों को ही अपना भगवान मानना है। पंडित जी **'परहित सरिस धर्म नहिं भाई (दूसरों की भलाई करने से बड़ा कोई धर्म नहीं)'** चौपाई प्रायः सुनाते थे। परंतु 1947 में मिली स्वतंत्रता के दशकों बाद भी स्थिति निराशाजनक बनी रही, जिसे शायर दुष्यंत ने व्यक्त करते हुआ लिखा था, **'कहाँ तो तय था चरागाँ हर एक घर के लिये, कहाँ चराग मयस्सर नहीं शहर के लिये'**। वंचित वर्गों तक विकास के फल नहीं पहुँचने के कारणों की एक झलक इन शब्दों में मिलती है, **'यहां तक आते-आते सूख जाती हैं कई नदियां मुझे मालूम है पानी कहां ठहरा हुआ होगा'**।

पंडित जी के चिंतन में यह विचार समाहित है कि अंतिम व्यक्ति को राष्ट्र की नीति निर्धारक श्रेणी में कैसे लाया जाए? समाज से कैसे गरीबी हटे, कैसे अशिक्षा मिटे, वैज्ञानिक विकास के विभिन्न लाभों से वंचित लोगों तक वो लाभ कैसे पहुंचाए जाएं? किस तरह वंचित वर्ग स्थानिक उत्पीड़न से मुक्त हों और अपने श्रम का उचित पारिश्रमिक प्राप्त कर सके, वंचितों के बच्चे कैसे वैज्ञानिक, चिकित्सक, अभियंता, प्रशासनिक अधिकारी, मंत्री, मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, न्यायाधीश, उद्योगपति आदि बनें? यह सुनिश्चित हो कि, कोई भीख मांगने, बाल मजदूरी करने एवं शरीर बेचने के लिए मजबूर न हो। कोई भी स्वास्थ्य सेवाओं के अभाव में जान न गँवाए, हर कोई दासत्व से मुक्त हो, सामाजिक एवं राष्ट्रीय निर्णयों में वंचित वर्ग की बराबर सहभागिता हो। अन्त्योदय के भाव में यह निहित है कि जो भी योजनाएं बनें वो राष्ट्र-निर्माण एवं राष्ट्र चिंतन को केंद्र में रख कर बनें। इन योजनाओं में बेघर को घर, बेरोजगार को रोजगार, भूमिहीन को भूमि, दिव्यांग को अवसर, बाल मजदूरी उन्मूलन, महिला प्रमुख वाले परिवार को सुरक्षा एवं सहायता, बीमार को उपचार, किसान को पैदावार के उचित मूल्य, साहूकारों के चंगुल से मुक्ति, एवं श्रमिक को उसके श्रम का उचित दाम देने का संकल्प हो। देश के हर हिस्से में मातृशक्ति न केवल कोख में अपितु बाहर भी उतनी ही सुरक्षित हो। राष्ट्र के हो रहे चहुमुखी विकास के फल केवल सत्ता के केंद्र तक सीमित न रहकर उसकी परिधि तक पहुँच सकें। अर्थात हर भारतीय भारत की प्रगति का हिस्साधारक हो। पण्डितजी यह स्वीकारते थे कि दलित समाजबान्धवों पर सदियों से घोर अन्याय होता रहा है। परंतु इस कथित उच्च वर्ग ने इनके प्रति सामान्य मनुष्यता भी नहीं दिखाई। साथ ही उन्होंने इस पर भी चिंता जताई कि कुछ दलित नेता अपने समाजबान्धवों को ऊपर उठाने के लिए प्रामाणिक सहयोग देने के स्थान पर उनमें विद्वेष एवं अलगाववादी भावना के विषैले बीज बोते हैं और इस प्रवृत्ति को समाप्त करना होगा। राष्ट्रीय विघटन की इस समस्या का निदान पंडित जी के रास्ते से ही संभव है। वह मार्ग है राष्ट्र को केंद्रबिन्दु मानकर व्यक्ति के विकास को पूरा अवसर देते हुए, संघर्ष के बजाय समन्वय के मार्ग का अवलम्बन करना। इसी क्रम में आज देश में भारतीय भाषाओं में इंजीनियरिंग एवं चिकित्सा शिक्षा, वनवासियों का मुख्यधारा में जुड़ाव, महिलाओं एवं वंचितों को अधिकाधिक अवसर देने के प्रयास किए जा रहे हैं। आज प्रत्येक देशवासी को अन्त्योदय हेतु संकल्पित होने की आवश्यकता है।

संपादक ■

उत्तर प्रदेश में अन्त्योदय

नरेन्द्र भदौरिया
(राष्ट्रवादी विचारक एवं लेखक)

अन्तोदय की सफलता मुख्यमन्त्री योगी आदित्यनाथ के कुशल नेतृत्व और उनकी मंत्रिमण्डलीय टीम की मिली जुली इच्छा शक्ति से सम्भव हो रहा है। एक समय ऐसा था जब देश के प्रधानमन्त्री रहे राजीव गाँधी को सार्वजनिक रूप से स्वीकार करना पड़ा था कि दिल्ली से योजनाओं के 100 रुपयों में से 15 रुपये ही देश की जनता तक पहुँच पाते हैं।

उत्तर प्रदेश का क्षेत्रफल 240928 वर्ग किमी है। इस विशाल भूभाग में 2023 के अनुमानों के अनुसार 25 करोड़ 21 लाख जनसंख्या बसी हुई है। जो भारत में जनसंख्या के घनत्व की दृष्टि से सर्वाधिक है। इतनी बड़ी जनसंख्या में से 03 करोड़ 91 लाख (17 प्रतिशत) लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन जीते हैं। इन लोगों तक मोदी-योगी की डबल इंजन सरकार ने अन्त्योदय योजनाओं का लाभ पहुँचा कर जो काम किया है, वह अपने आप में एक कीर्तिमान बन गया है।

दीनदयाल उपाध्याय भारत के महान चिन्तक, कुशल संगठनकर्ता और प्रख्यात अर्थशास्त्री थे। उन्होंने भारत के विकास के लिए अन्त्योदय की परिकल्पना की थी। उनका कहना था कि भारतीय समाज विविधताओं से भरा है। सभी राज्यों की सामाजिक आर्थिक संरचना का उन्होंने विशद अध्ययन किया था। उन्होंने विचार किया कि जब तक समाज की अन्तिम सीढ़ी पर खड़े लोगों के विकास के लिए योजना बनाकर प्रयत्न नहीं किये जाते तब तक सारे प्रयत्न एकांगी सिद्ध होंगे।

देश के कुछ लोगों तक योजनाएं पहुँचेंगी जबकि बहुसंख्य लोग वंचित बने रहेंगे। ऐसी स्थिति में विसंगतियां बढ़ती जाएंगी। उपाध्याय जी का कहना था कि वंचित वर्गों के व्यापक असन्तोष के चलते देश की प्रगति सदा अवरुद्ध बनी रहेगी। साथ ही समाज में विग्रह और कलह के लिए नित्य नये कारक खड़े होते रहेंगे। जिससे अशान्ति और असुरक्षा की भावनाएं भड़काने वाली शक्तियों को खुला मंच मिलता रहेगा। दीनदयाल जी ने स्पष्ट कहा था कि सम्यक दृष्टि यही है कि अन्तिम छोर के व्यक्ति तक विकास के अवसर पहुँचें।

दीनदयाल जी उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के एक गाँव में 25 सितम्बर 1916 को जन्मे थे। उनका प्रारम्भिक जीवन बहुत सी जटिलताओं में व्यतीत हुआ। शिक्षा पूर्ण करने की अवधि में ही वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सम्पर्क में आ गये थे। उनकी विलक्षण प्रतिभा को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक माधव सदाशिव गोलवरकर ने परखा। दीनदयाल उपाध्याय जी को संघ के संगठन से जुड़ कर समाज और राष्ट्र की सेवा का आजीवन व्रत लेना रुचिकर लगा। वह संघ के प्रचारक बन गये। आगे चलकर उन्हें श्यामा प्रसाद मुखर्जी के संग भारतीय जनसंघ जैसे राष्ट्रवादी राजनीतिक दल में अग्रिम

पंक्ति के नेता के रूप में काम करने का अवसर मिला। वह इस दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष के पद तक पहुँचे। पर लगभग डेढ़ माह ही इस पद पर रह सके।

दीनदयाल जी की असमय मृत्यु हो गयी। वह ट्रेन से यात्रा कर रहे थे। 12 फरवरी 1968 को उनकी किसी ने हत्या कर दी। मुगलसराय स्टेशन के निकट उनका शव सिग्नल के पास पड़ा मिला। अल्प अवधि के राजनीतिक जीवन में उन्होंने अन्त्योदय का मन्त्र देश को दिया । आज इसके बल पर एक दर्जन से अधिक योजनाएं देश में नगरीय और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के वंचित, अल्प आय वर्ग के लोगों के लिए स्वावलम्बन के निमित्त सन्चालित की जा रही हैं। अन्त्योदय नाम की इन योजनाओं का उद्देश्य वंचित वर्गों को विकास की मुख्यधारा में लाना है। कौशल विकास एक अति महत्वाकांक्षी योजना है। जिससे ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों के युवक-युवतियों को अपनी दक्षता बढ़ाकर विकास की सीढ़ियां चढ़ने में बड़ी सहायता मिलती है। ऐसी योजनाएं उत्तर प्रदेश सहित सभी राज्यों में बहुत लोकप्रिय हो रही हैं जिससे वंचित समाज की नाविन्य पीढ़ी को स्वावलम्बन के अवसर मिल रहे हैं।

केन्द्र की नरेन्द्र मोदी सरकार और उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार की ओर से स्वरोजगार के अवसरों को बढ़ाने की दिशा में जो सफलता मिल रही है उसमें अन्त्योदय विचार के अन्तर्गत संचालित योजनाओं का बहुत बड़ा योगदान है। सरकार ने नगरीय आवास और नगरीय गरीबी उपशमन के लिए 500 करोड़ की राशि का प्रबन्धन किया है। यह योजना प्रारम्भ में 790 नगरीय क्षेत्रों में

जब तक समाज की अन्तिम सीढ़ी पर खड़े लोगों के विकास के लिए योजना बनाकर प्रयत्न नहीं किये जाते तब तक सारे प्रयत्न एकांगी सिद्ध होंगे।

प्रारम्भ की गयी। जिसका दायरा बढ़ता गया। इस योजना से बेघर परिवारों को अपने घर की सुविधा मिली। साथ ही अपने विकास के लिए स्वयं की दक्षता बढ़ाने का अवसर मिलने लगा। नगरीय क्षेत्रों में जहां आवास और गरीबी उपशमन मंत्रालय के अन्तर्गत व्यापक कार्य उत्तर प्रदेश में भी किये गये हैं। वहीं ग्रामीण विकास मंत्रालय ने ग्रामीण क्षेत्रों में दीनदयाल ग्रामीण अन्त्योदय योजना के अन्तर्गत नामित ग्रामीण परिवारों को आवास तथा कौशल्या योजना के माध्यम से लाभान्वित किया जा रहा है।

स्वावलम्बन के उद्देश्य से अन्त्योदय योजनाओं के पाँच रूप हैं। पहला कौशल प्रशिक्षण और स्थापन से स्वावलम्बन, दूसरा सामाजिक एकजुटता और संस्था विकास को माध्यम बनाना, तीसरा गरीबों को अनुदान, चौथा निराश्रयी लोगों को आश्रय की व्यवस्था, पांचवां कुछ ऐसी योजनाएं जो कूड़ा उठाने वालों, विकलांगों तथा कुछ अन्य वंचित लोगों को यथा समय सहायता प्रदान कर सकें।

अन्त्योदय अन्न योजना एक ऐसी बड़ी व्यापक योजना है जिसने सारे संसार में भारत की नाक ऊँची की है। आज हर भारतवासी गर्व से कहता है कि सरकार की चेतना इतनी जाग्रत है कि 140 करोड़ जनसंख्या में से कोई भूखा नहीं सो सकता। ऐसी विशाल योजना को लागू करने के लिए बहुत बड़ी जीवट और राजनीतिक इच्छा शक्ति की आवश्यकता थी। ऐसी विलक्षण दृष्टि प्रबल नेतृत्व क्षमता के बिना असम्भव थी। जिसे भारतीय जनता पार्टी के नीति नियामकों ने कर दिखाया। उत्तर प्रदेश अन्त्योदय योजनाओं के क्रियान्वयन में हर स्तर पर अग्रिम पंक्ति में खड़ा है। यह सफलता मुख्यमन्त्री योगी आदित्यनाथ के कुशल नेतृत्व और उनकी मंत्रिमण्डलीय टीम की मिली जुली इच्छा शक्ति से सम्भव हो रहा है। एक समय ऐसा था जब देश के प्रधानमन्त्री रहे राजीव गाँधी को सार्वजनिक रूप से स्वीकार करना पड़ा था कि दिल्ली से योजनाओं के 100 रुपयों में से 15 रुपये ही देश की जनता तक पहुँच पाते हैं। वहीं आज प्रत्येक नागरिक गर्व से कहता है कि सरकारी योजनाओं में बाधा डालने का दुस्साहस अब किसी में नहीं है। ■

उत्तर प्रदेश के सांस्कृतिक उदय से अन्त्योदय

डॉ. विशेष गुप्ता
(निवर्तमान अध्यक्ष,
उ. प्र. बाल अधिकार संरक्षक आयोग)

उत्तर प्रदेश सांस्कृतिक उदय से ज्ञात होता है कि यहां एक समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा रही है। शिक्षा, कला, संगीत, साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में यहां के शिक्षाविदों एवं कलाकारों ने पूरे देश में ही नहीं अपितु वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। वैसे तो भारत के प्रत्येक राज्य की अपनी विशिष्ट संस्कृति एवं विरासत रही है। परन्तु राम और कृष्ण की जन्मभूमि रहे उत्तर प्रदेश की राज्य की संस्कृति एवं विरासत अपने आप में अनूठी है। 12 जनवरी 1950 को स्थापित उत्तर प्रदेश की जनसंख्या आज 24 करोड़ के आस-पास है। आज अनेकता में एकता को संजोये यह प्रदेश अपने आप में एक लघु भारत है। भारतवर्ष के विभिन्न प्रांतों के लोग इस प्रदेश में तथा इस प्रदेश के लोग शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में देश-विदेश में अपने प्रदेश का नाम रोशन कर रहे हैं। आज उत्तर प्रदेश एक ऐसा राज्य है जिस पर देश ही नहीं दुनिया की दृष्टि लगी है। 24 करोड़ की आबादी का लेकर आज प्रदेश और देश की राजनीति में इसका महत्वपूर्ण दखल है। देश को अनेक नामचीन हस्तियां और नेतृत्व देने वाला उत्तर प्रदेश एक लम्बे कालखण्ड तक स्वयं राजनीति और नौकरशाही के मकड़जाल में फंस कर रहा गया था। परन्तु 19 मार्च 2017 को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश

प्रधानमंत्री द्वारा दिये गये पंच प्रणों यानि- गुलामी से आजादी, विकसित भारत का लक्ष्य, अपनी विरासत पर गर्व, देश में एकता और एकजुटता तथा नागरिकों में कर्तव्य भावना पर योगी सरकार पूरी तन्मयता के साथ कार्य कर रही है।

के इस सबसे बड़े राज्य का दायित्व योगी आदित्यनाथ के कंधों पर डाला। सामान्यतः जनता से किये गये वायदों को पूर्ण करना आसान नहीं होता। वह भी ऐसी स्थिति में जब प्रदेश की आर्थिक और प्रशासनिक स्थिति जर्जर हों? राजनीतिक विरासत में मिली ऐसी विषम परिस्थिति में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपनी दूरदृष्टि एवं प्रशासनिक कौशल से प्रदेश के नूतन विकास का मार्ग प्रशस्त कर दिया। आज उत्तर प्रदेश अभी तक के अपने सबसे बड़े 6 लाख 90 हजार करोड़ रुपये के बजट के साथ तेजी से वन ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की दिशा की ओर अग्रसर है।

देश की आजादी के बाद के कालखण्ड का इतिहास साक्षी है कि एक बड़े कालखण्ड तक गरीबी उन्मूलन के स्थान पर गरीबी हटाओ जैसे राजनीतिक नारों की प्रथा जारी रही। पूर्ववर्ती सरकारों की ऐसी शासन व्यवस्था से देश व प्रदेश को निराशा और असंतुष्टि की ओर ले गई। कहना न होगा कि इस प्रकार की राजनीतिक व्यवस्था को विकास से जुड़े शासन की व्यवस्था ने सीधे तौर पर चुनौती दी। 2017 के बाद प्रदेश का नारा राजनीति को विकास के द्वारा, विकास के लिए और विकास के जरिये एक उपकरण बनकर सामने आया और विकास की एक नयी राजनीति ने जन्म लिया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सबका साथ, सबका विकास, सबका प्रयास जैसे विकसित वाक्यों से जन-जन के जीवन में विकास और सहभागिता के माध्यम से सकारात्मकता बदलाव लाने वाली एक नई व्यवस्था ने जन्म लिया। विकास की इस नई अर्थव्यवस्था ने पंक्ति में खड़े अंतिम व्यक्ति तक इस विकास की किरणों से उनका जीवन प्रकाशवान करने का महत्वपूर्ण कार्य किया

नरेन्द्र मोदी सरकार की इस दूरदर्शी वैकासिक दृष्टि से प्रेरणा लेकर योगी सरकार ने भी राज्य के सर्वांगीण विकास हेतु एक समग्र योजना और इसके क्रियान्वयन की एक कठोर व्यवस्था से जुड़ी रणनीति तैयार की। योगी आदित्यनाथ स्वयं एक सांस्कृतिक व्यक्ति हैं। उन्होंने पूर्व में भी गौरक्षपीठ के द्वारा अनेक सांस्कृतिक गतिविधियों का संचालन किया है। यही कारण रहा है कि उन्होंने

भारतीय जनता पार्टी के संविधान में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को प्रमुखता से व्यावहारित किया है। इस दृष्टि से सरकार बनते ही उन्होंने अवैध पशुवध कारखाने बंद करने की घोषणा की। उन्होंने साफतौर पर देखा कि ये कारखाने पशुधन को ही नष्ट नहीं कर रहे, बल्कि सामाजिक समरसता में भी विष घोल रहे हैं।

प्रदेश के सांस्कृतिक उदय के माध्यम से ही मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रदेश में विभिन्न स्थानों पर धार्मिक और आध्यात्मिक सर्किट का निर्माण कर अन्त्योदय की संकल्पना को साकार किया है। इनमें अयोध्या सर्किट, मथुरा सर्किट, बौद्ध सर्किट एवं श्रीकृष्ण सर्किट प्रमुख है। इसके लिए उन्होंने 800 करोड़ रुपयों की प्रसाद योजना लाकर देश के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को गति देकर अन्त्योदय की भावना को साकार किया है।

जनसंघ के संस्थापक प. दीनदयाल उपाध्याय जी ने राजनीत को समाज की कतार में खड़े अंतिम व्यक्ति के उत्थान के एक साधन के रूप में देखा था। पण्डित जी मानते थे कि अन्त्योदय के माध्यम से ही समग्र राष्ट्र ही नहीं, बल्कि समग्र विश्व का सम्यक व पूर्णांग विकास हो सकता है। अन्त्योदय का अर्थ ही 'समाज की अंतिम पंक्ति के व्यक्ति का उदय'। इसका सीधा सा अर्थ है कि गरीब और पिछड़े वर्गों को दूसरे वर्गों के समान खड़ा करना। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह अंतिम व्यक्ति तक के आर्थिक और सामाजिक कल्याण के संरक्षण और संवर्धन के उद्देश्य से संचालित विकासात्मक शासन और सरकार की सफलता के लिए एक अनिवार्य शर्त है। सच यह है कि अन्त्योदय एक कल्याणकारी राज्य का निर्माण करता है। अन्त्योदय की इसी भावना को मूर्तरूप देने के लिए दूसरे कार्यकाल में योगी सरकार ने विकास की प्राथमिकता के साथ ही दलितों, शोषितों और वंचितों के उत्थान के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराया है। उन्होंने इसके लिए दिन-प्रतिदिन नई योजनाओं का सृजन भी किया है। 15 करोड़ से अधिक अन्त्योदय और पात्र लोगों को निःशुल्क खाद्य सामग्री वितरण कराने जैसी योजनाओं का क्रियान्वयन उत्तर प्रदेश सरकार

वैसे तो भारत के प्रत्येक राज्य की अपनी विशिष्ट संस्कृति एवं विरासत रही है। परन्तु राम और कृष्ण की जन्मभूमि रहे उत्तर प्रदेश की राज्य की संस्कृति एवं विरासत अपने आप में अनूठी है। 12 जनवरी 1950 को स्थापित उत्तर प्रदेश की जनसंख्या आज 24 करोड़ के आस-पास है। आज अनेकता में एकता को संजोये यह प्रदेश अपने आप में एक लघु भारत है।

ने पूर्णता के साथ लागू किया। प्रदेश सरकार के द्वारा आज 50 से भी अधिक योजनाएं प्रदेश के हितार्थ लागू हैं। इनमें स्वच्छ भारत मिशन के अन्तर्गत 2.61 करोड़ शौचालयों के निर्माण से 10 करोड़ लोग लाभान्वित हुये। मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना के तहत 16 लाख से अधिक बेटियों को लाभ मिला। 98.28 लाख से अधिक निराश्रित महिलाओं, वृद्धजनों और दिव्यांगजनों को एक हजार रुपये मासिक पेंशन, दो लाख से अधिक महिलाओं को पीएम स्वनिधि योजना से लाभ, बिना किसी भेदभाव के प्रदेश की बालिकाओं को स्नातक स्तर तक की निःशुल्क शिक्षा, प्रधानमंत्री मातृवंदना योजना के अन्तर्गत 54.44 लाख से अधिक माताओं को लाभ, 1.50 लाख से अधिक महिलाओं को सरकारी नौकरी का लाभ के साथ ही 60 लाख से भी अधिक किसानों का 36000 करोड़ रुपयों का ऋण माफ किया। इसके साथ-साथ आज स्कूलों, विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के स्तर पर भारतीय संस्कृति के अनुकूल पाठ्यक्रम में बदलाव लाकर भारतीय मूल्यों और स्वदेशी संस्कृति को विस्तार देने का कार्य प्रदेश सरकार तेजी से कार्य कर रही है। 15 अगस्त 2022 को लालकिले की प्राचीर से प्रधानमंत्री द्वारा दिये गये पंच प्रणों यानि- गुलामी से आजादी, विकसित भारत का लक्ष्य, अपनी विरासत पर गर्व, देश में एकता और एकजुटता तथा नागरिकों में कर्तव्य भावना पर योगी सरकार पूरी तन्मयता के साथ कार्य कर रही है। 20 लाख से अधिक परिवारों को पक्का घर, तीन करोड़ से अधिक गरीब परिवारों को मुफ्त बिजली कनेक्शन, ओ.डी.ओ.पी. योजना से रोजगार सृजन, बेरोजगारी दर का घटना, प्रदेश में सभी को सुरक्षा का वादा, सामूहिक विवाह योजना के अन्तर्गत गरीब बेटियों का विवाह जैसी अनेक योजनाओं से प्रदेश में गरीबों व वंचितों के मन में एक नई आशा का संचार हुआ है। हमें आशा है कि प्रदेश सरकार जिस गति से अन्त्योदय की भावना को प्रदेश की राजनीति और विकास में समाहित कर रही है, उससे निश्चित ही उत्तर प्रदेश उत्तम प्रदेश बनने की ओर अग्रसर हो रहा है। ■

एक जिला एक उत्पाद से अन्त्योदय

अशोक सिन्हा
(सचिव, विश्व संवाद केन्द्र, लखनऊ)

समाज के आर्थिक, सामाजिक, एवं राजनैतिक रूप से पिछड़े, गरीब कमजोर वर्ग का उत्थान हो सके। इस निमित्त सबसे आखिरी व्यक्ति के उत्थान का प्रयास ही अन्त्योदय है। स्व. दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद के मूल में अन्त्योदय है। सामाजिक एवं आर्थिक विकास के द्वारा कौशल विकास और अन्य उपायों के माध्यम से आजीविका के अवसरों में वृद्धि करते हुए व्यक्ति का सामाजिक स्तर ऊपर उठाना इस उद्देश्य की पूर्ति करता है। सबसे गरीब व्यक्ति को सहायता कैसे पहुंचे इसके लिये अनेक सामाजिक एवं राजनैतिक संगठन सक्रिय प्रयास करते रहते हैं। सरकार एवं शासन व्यवस्था भी अपनी ओर से अनेकों योजनाएं चलाते रहते हैं। उत्तर प्रदेश की योगी आदित्यनाथ सरकार नें इस दिशा में गम्भीरता से प्रयास हुए हैं। यह कहना नितान्त उचित होगा। भारत की समृद्धि में लघु एवं कुटीर उद्योगों का सर्वाधिक योगदान रहा है। जब प्रत्येक गांव आत्मनिर्भर था और प्रत्येक गांववासी हुनरमंद होता था तब भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। भारत का वैभव विश्व में विख्यात था। सम्पूर्ण विश्व से भारत में व्यापारी आकर व्यापार करते थे। ढाका मलमल, केरल के मसाले, कन्नौज का इत्र और एक से बढ़कर कृषि उत्पाद भारत की पहचान होते थे। पूरा विश्व इन वस्तुओं से सन्मोहित था। उस समय अन्त्योदय की आवश्यकता नहीं थी। कालान्तर में जब भारत में आक्रान्ता आये, देश गुलाम हुआ तब लूट और बेकारी बढ़ी। औद्योगिकीकरण ने भारतीय अर्थव्यवस्था का स्वरूप ही बदल दिया। गांव में हस्तशिल्प का ह्रास हुआ और परम्परागत उद्योगधन्धे चौपट हो गये। यह स्थिति गरीबी बढ़ाने वाली हुई। समाज में विभाजन हुआ। श्रम का महत्व कम होने लगाऔर बाबूगिरी अफसरशाही सम्मान सूचक होने लगा। कामगार, कृषक, मजदूर वर्ग द्वितीय श्रेणी का नागरिक माना जाने लगा। बेरोजगारी बढ़ी और देश में गरीबी बढ़ी। गरीब देश विश्वगुरु नहीं बन सकता। भारत को यदि विश्व का सिरमौर बनना है तो उसे समाज के अन्तिम पायदान पर बैठे हर नौजवान को काम देने का अवसर प्रदान करना होगा तथा हर हुनर को हाट प्रदान करना होगा। इस प्रयास से केवल और केवल सरकारी नौकरी या नौकरी करने की तीव्र दबावयुक्त भावना पर रोक लगेगी और अनावश्यक बेरोजगारी पर अंकुश लगेगा। हाथ को जब काम मिलेगा तब हुनर विकसित होगा और देश की वास्तविक प्रगति होगी। उत्पादन और बाजार के मध्य समन्वय भी बनेगा तथा नियति भी बढ़ेगी।

उत्तर प्रदेश सरकार ने इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु एक जिला एक उत्पाद योजना को जनवरी 2018 से प्रदेश में लागू किया है। जिसकी भारत ही नहीं विश्व में चर्चा हो चुकी है। राज्य में इससे लाखों युवकों को काम मिला है।

उत्तर प्रदेश सरकार ने इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु एक जिला एक उत्पाद योजना को जनवरी 2018 से प्रदेश में लागू किया है। जिसकी भारत ही नहीं विश्व में चर्चा हो चुकी है। राज्य में इससे लाखों युवकों को काम मिला है। तथा राज्य सरकार की ओर से 5 वर्षों में हुनरमंद व्यक्तियों को 26000 रुपये की सहायता भी दी जा रही है। हुनर हाट लगाकर बाजार के अवसर भी प्रदान किए जा रहे हैं। इस योजना का मुख्य उद्देश्य प्रदेश के प्रत्येक जनपद के हस्तकला, हस्तशिल्प एवं विशिष्ठ हुनर को सुरक्षित एवं विकसित करना है। इससे सम्बंधित जनपद में रोजगार सृजन और आर्थिक समृद्धि का लक्ष्य पूरा हो रहा है। जनपद में विशिष्ठ उत्पाद के लिए कच्चामाल, डिजाइन, प्रशिक्षण, तकनीकी और बाजार भी उपलब्ध कराया जा रहा है। इससे अत्यन्त छोटे स्तर पर अच्छा लाभ मिलने के साथ परिवार व घर छोड़कर अन्यत्र भटकना नहीं पड़ता है। छोटी-छोटी तकनीकी से श्रेष्ठ उत्पादन होने लगे हैं और सहज अनुदान, विपणन की सुविधा तथा प्रशिक्षण का कार्य किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश की सफलता को देश के 17 राज्यों में 54 इनक्यूकेशन केन्द्र खोले गये हैं। 35 राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों के 707 जिलों को केन्द्रीय खाद्य एवं प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय द्वारा एक जिला एक उत्पाद के लिए अनुमोदित कर दिया गया है। 17 राज्यों में कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, जम्मू-कश्मीर, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु, तेलंगाना, छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश, केरल, सिक्किम, आन्ध प्रदेश, उड़ीसा एवं उत्तराखण्ड शामिल है। इन सभी राज्यों में 470 जिला स्तरीय प्रशिक्षण केन्द्र बने हैं।

उत्तर प्रदेश में एक जनपद एक उत्पाद के अन्तर्गत जिला और उत्पाद की सूची :-

जिला	उत्पाद का नाम	जिला	उत्पाद का नाम
आगरा	चमड़ा उत्पाद	हापुड़	होम फनिशिंग
अमरोहा	वाद्ययंत्र (ढोलक)	हाथरस	हैण्डलूम
अलीगढ़	ताले व हार्डवेयर	हमीरपुर	हींग
औरैया	दूध व घी प्रसंस्करण	जालौन	जूते
आजमगढ़	काली मिट्टी की कलाकृतियां	जौनपुर	हस्तनिर्मित कागज
अम्बेडकर नगर	वस्त्र उत्पाद	झांसी	ऊनी कालीन, दरी
अयोध्या	गुड़	कौशाम्बी	शाफ्ट टॉयज
अमेठी	मूल उत्पाद	कन्नौज	खाद्य प्रसंस्करण केला
बदायूं	जरी जरदोजी उत्पाद	कुशीनगर	इत्र
बागपत	होम फनिशिंग	कानपुर देहात	केला फाइबर उत्पाद
बहराइच	गेंह डन्तल हस्त उत्पाद	कानपुर नगर	एल्युमूनियम बर्तन
बरेली	जरी जरदोजी	कासगंज	चमड़ा उत्पाद
बलिया	बिन्दी उत्पाद	लखीमपुर खीरी	जरी जरदोजी
बस्ती	काष्ठ कला	ललितपुर	जनजातीय शिल्प
बलरामपुर	खाद्य प्रसंस्करण (दाल)	लखनऊ	जरी सिल्क साड़ी
भदोही	कालीन व दरी	महराजगंज	चिकनकारी, जरी
बांदा	शजर पत्थर शिल्प	मेरठ	फर्नीचर
बिजनौर	काष्ठकला	महोबा	खेल सामग्री
बाराबंकी	वस्त्र उत्पाद	मिर्जापुर	गोरा पत्थर
बुलन्दशहर	सिरेमिक उत्पाद	मैनपुरी	कालीन
चन्दौली	जरी जरदोजी	मुरादाबाद	तारकशी कला
चित्रकूट	लकड़ी के खिलौने	मथुरा	धातु शिला
देवरिया	सजावट के सामान	मुजफ्फरनगर	सेनिटरी फिटिंग
इटावा	वस्त्र उद्योग	मऊ	गुड़
एटा	घुंघरू घण्टी व पीतल उत्पाद	पीलीभीत	वस्त्र उत्पाद
फरूखाबाद	वस्त्र छपाई	प्रतापगढ़	बांसुरी
फतेहपुर	बेडशीट व आयरन फेब्रीकेशन कार्य	प्रयागराज	आंवला प्रसंस्करण
फिरोजाबाद	कांच के उत्पाद	रायबरेली	काष्ठकला
गौतमबुद्धनगर	रेडीमेड गारमेंट	रामपुर	पैचवर्क के साथ एम्लिक वर्क, जरी पैचवर्क
गाजीपुर	जूटवाल हैंगिंग	संतकबीरनगर	ब्रासवेयर
गाजियाबाद	अभियांत्रिकी सामग्री	शाहजहांपुर	जरी जरदोजी
गोण्डा	खाद्य प्रसंस्करण (दाल)	शामली	लौह कला
गोरखपुर	टेरीकोटा	सहारनपुर	लकड़ी पर नक्कासी
श्रावस्ती	जनजातीय शिल्प	सोनभद्र	कालीन
सम्भल	हस्तशिल्प (हार्न बोन)	सुल्तानपुर	मूंज उत्पाद
सिद्धार्थनगर	काला नमक	उन्नाव	जरी जरदोजी
सीतापुर	दरी	वाराणसी	बनारसी रेशम साड़ी

उपरोक्त उत्पादों को अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्रदान की गई है। यह उत्पाद एक ब्राण्ड बने हैं और यह ब्राण्ड यू.पी की पहचान होगी। इस योजना के अन्तर्गत लघु, मध्यम और नियमित उद्योगों को मदद प्रदान की जा रही है। अनुदान व्यवस्था सामान्य सुविधा केन्द्र, विपणन सुविधा, आधुनिक तकनीकी प्रशिक्षण की सुविधा राज्य सरकार उपलब्ध करा रही है। लक्ष्य 25 करोड़ बेरोजगार युवाओं को रोजगार व नौकरी देने का लक्ष्य है और राज्य का सकल घरेलू उत्पादन में उल्लेखनीय उपलब्धि मिल रही है। पारम्परिक उद्योगों की तेजी से स्थापना हो रही है और छोटे-छोटे गांवों का नाम विदेशों में भी पहुंच रहा है। उत्तर प्रदेश की संस्कृति का भी प्रसार हो रहा है। जी-20 के राष्ट्राध्यक्षों को ओ. डी. ओ. पी. देकर प्रधानमंत्री ने भी उत्तर प्रदेश का मान बढ़ाया।

विदेशी मेहमानों को वाराणसी की गुलाकी मीनाकारी कपलिंग्स, गणेश प्रतिमा, बांदा का शजर स्टोन कपलिंग्स, कन्नौज का इत्र, लखनऊ का चिनककारी वस्त्र, मुरादाबादी पीतल बाउल सेट, खुर्जा के कप प्लेट्स, सीतापुर के आसन, बरेली के जरी जरदोजी से बने उपहार, दिये गये जो बहुत पसंद किए गए। अब उ.प्र. के उपहार देश-दुनिया के बड़े निवेशकों के ऑफिस व घरों की शोभा बढ़ा रहे हैं। सरकार के रोड शो इवेंट में अपनी मिट्टी-संस्कृति की सुगंध तभी महका रही है योगी सरकार। लखनऊ के ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में इस प्रयास की विश्वव्यापी चर्चा की गई तथा प्रत्यक्ष स्टाल लगे जहां दर्शकों की भीड़ जमा थी।

संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट में यह उल्लेख हुआ है कि भारत में **13.5** करोड़ जनसंख्या को गरीबी रेखा से ऊपर लाकर विश्व से गरीबी दूर करने का विशेष कार्य किया गया है जो पूरे यूरोप की जनसंख्या से भी अधिक है। यही है अन्त्योदय। अब धरातल पर काम दिखने लगा है। यदि देश प्रथम, राष्ट्र प्रथम, संस्कृति प्रथम, व्यक्ति की गरिमा और श्रम का सम्मान प्रथम इस भावना से देश के राजनेता, श्रमिक, नागरिकगण कार्य करेंगे तो अन्त्योदय का सूरज अवश्य चमकेगा। भारत की गरिमा बढ़ेगी और राष्ट्र की विश्व को दिशा देने की क्षमता बढ़ेगी। भारती अति प्राचीनकाल से अपनी श्रमशक्ति, मानव कल्याण और विश्व को एक कुटुम्ब मान कर सर्वहितकारी भावना से कार्य करने के लिए प्रसिद्ध रहा है। पुनः सांस्कृतिक आजादी और पुनर्जागरण का काल आया है। पं. दीनदयाल उपाध्याय के स्वप्न को साकार और सार्थक बनाने का यह अवसर अवश्य देश का मान-सम्मान बढ़ाने वाल सिद्ध होगा। ■

मीडिया को उदासीनता त्यागनी होगी!

डॉ अनिल कुमार निगम
(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं)

अगर मीडिया अंत्योदय योजना के बारे में लोगों को जागरूक करने और इस योजना के कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियों और विसंगतियों के बारे में जनता एवं शासन के बीच एक सेतु का कार्य करे तो इससे वंचितों को इसका ज्यादा से ज्यादा लाभ मिल सकता है।

दीनदयाल अंत्योदय योजना उत्तर प्रदेश में गरीबी उन्मूलन में अहम भूमिका निभा रही है। अन्त्योदय से आशय ही है कि अंतिम पायदान पर मौजूद व्यक्ति का उदय करना। उत्तर प्रदेश में मुख्यमंत्री आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली सरकार ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में इस योजना को लागू कर जरूरतमंद लोगों को निरंतर लाभान्वित कर रही है। योजना के बारे में लोगों को जागरूक, शिक्षित और सूचित करने में मीडिया की बहुत अहम भूमिका है। लेकिन यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि लोकतंत्र में चौथे स्तंभ का दर्जा रखने वाला मीडिया अंत्योदय योजना को लेकर बहुत उदासीन नजर आता है।

गौरतलब है लोकतंत्र में मीडिया को चौथे स्तंभ का स्तर प्राप्त है। कार्यपालिका, व्यवस्थापिका और न्यायपालिका के बाद मीडिया की बहुत अहम भूमिका है। हालांकि भारतीय संविधान में मीडिया को कोई विशेषाधिकार नहीं दिया गया है और न ही उसे चौथे स्तंभ के तौर दर्ज किया गया है। लेकिन मीडिया पर लोगों की विश्वसनीयता के कारण उसे चौथा स्तंभ माना जाता है। वास्तविकता तो यह है कि लोकतंत्र की रक्षा और उसके सशक्तीकरण के लिए भी मीडिया की स्वतंत्रता आवश्यक है। भारतीय संविधान में अनुच्छेद 19 (1 ए) के अंतर्गत भारत के हर नागरिक को भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का मौलिक अधिकार प्राप्त है। इसी अधिकार के तहत ही भारत में मीडिया काम करता है।

दीनदयाल अंत्योदय योजना में मीडिया की भूमिका पर विश्लेषण करने के पहले एक नजर इस योजना के उद्देश्य पर डालना उचित रहेगा। इस योजना का उद्देश्य कौशल विकास और अन्य उपायों के माध्यम से आजीविका के अवसरों में वृद्धि कर शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी को कम करना है। मेक इन इंडिया, कार्यक्रम के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए सामाजिक तथा आर्थिक बेहतरी के लिए कौशल विकास आवश्यक है। दीनदयाल अंत्योदय योजना को आवास और शहरी गरीबी उपशमन मंत्रालय (एच.यू.पी.ए.) के तहत शुरू किया गया था।

यह योजना राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन (एनयूएलएम) और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआरएलएम) का एकीकरण है।

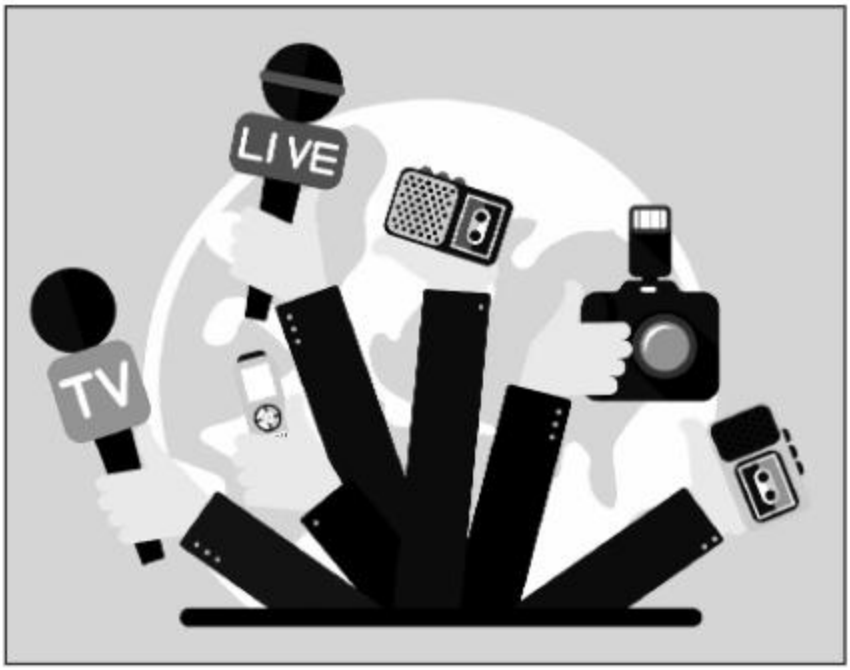

राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन (एनयूएलएम) को दीनदयाल अन्त्योदय योजना (डीएवाईएनयूएलएम) और हिन्दी में राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन नाम दिया गया है। इस योजना के तहत शहरी क्षेत्रों के लिए दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय योजना के अंतर्गत सभी 4041 शहरों और कस्बों को कवर कर पूरे शहरी आबादी को लगभग कवर करने की योजना है। लाभकारी स्वरोजगार और कुशल मजदूरी रोजगार के अवसर का उपयोग करने में सक्षम किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप मजबूत जमीनी स्तर के निर्माण से उनकी आजीविका में स्थायी आधार पर सराहनीय सुधार हो सके। इस योजना का लक्ष्य चरणबद्ध तरीके से शहरी बेघरों हेतु आवश्यक सेवाओं से लैस आश्रय प्रदान करना भी है। योजना शहरी सड़क विक्रेताओं की आजीविका संबंधी समस्याओं को देखते हुए उनकी उभरते बाजार के अवसरों तक पहुंच को सुनिश्चित करने के लिए उपयुक्त जगह, संस्थागत ऋण, और सामाजिक सुरक्षा और कौशल के साथ इसे सुविधाजनक बनाने से भी संबंधित है।

आजादी के पूर्व मीडिया से आशय प्रिंट मीडिया से होता था और आजादी के बाद मीडिया के स्वरूप में बदलाव आया है। आजादी के पूर्व मीडिया का संचालन पूरी तरह से स्वतंत्रता सेनानियों के पास था, इसलिए पत्रकारिता पूरी तरह से मिशनरी थी। लेकिन आजादी के बाद पत्रकारिता प्रोफेशन बन गई। और मीडिया पर उद्यमियों का नियंत्रण आ गया। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के पदार्पण और 1990 के दशक में वैश्वीकरण के बाद जिस तरीके से मीडिया में अभूतपूर्व परिवर्तन आया, उससे ये मीडिया घराने बाजारवाद से बहुत अधिक प्रभावित होने लगे और मीडिया की दशा और दिशा में तीव्र गति से बदलाव हुआ।

इंटरनेट मीडिया के आने के बाद तो मीडिया और अधिक व्यावसायिक हो गई। अधिक कमाई और प्रतिस्पर्धा की होड़ में ज्यादातर मीडिया घराने अपने मूल उद्देश्य से भटकने लगे। बावजूद इसके सिद्धांतों, मूल्यों और संवेदनशीलता की पत्रकारिता करने वाले मीडिया और पत्रकार अपने कर्तव्य पथ पर

गौरतलब है लोकतंत्र में मीडिया को चौथे स्तंभ का स्तर प्राप्त है। कार्यपालिका, व्यवस्थापिका और न्यायपालिका के बाद मीडिया की बहुत अहम भूमिका है। हालांकि भारतीय संविधान में मीडिया को कोई विशेषाधिकार नहीं दिया गया है और न ही उसे चौथे स्तंभ के तौर दर्ज किया गया है। लेकिन मीडिया पर लोगों की विश्वसनीयता के कारण उसे चौथा स्तंभ माना जाता है।

अडिग रहे। पत्रकारिता के तीन प्रमुख कार्य होते हैं-लोगों को सूचित करना, शिक्षित करना और स्वस्थ मनोरंजन करना आज मीडिया का दायरा बहुत बढ़ चुका है।

न्यू मीडिया के आने के बाद हर व्यक्ति पत्रकार बन गया है। लेकिन यह ऐसा पत्रकार है जिस तरीके से कोई बिना प्रशिक्षण के डॉक्टर या इंजीनियर बन जाए। ऐसे में आम आदमी खासतौर से जो अत्यंत गरीब और वंचित है, जिसके पास संसाधनों का बेहद अभाव है, उसे जागरूक और शिक्षित करने का काम तो मीडिया को ही करना चाहिए। अगर मीडिया अंत्योदय योजना के बारे में लोगों को जागरूक करने और इस योजना के कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियों और विसंगतियों के बारे में जनता एवं शासन के बीच एक सेतु का कार्य करे तो इससे वंचितों को इसका ज्यादा से ज्यादा लाभ मिल सकता है। सवाल यह है कि क्या यह काम मीडिया समुचित तरीके से कर रहा है?

वास्तविकता तो यह है कि कोई भी अखबार, न्यूज चैनल अथवा वेब पोर्टल गरीबी और गरीबों के कवरेज के मामले में गंभीरता नहीं दिखाता। इसका प्रमुख कारण यह है कि यह ऐसा क्षेत्र व वर्ग है जहां उसके पाठक नहीं हैं और उसकी टीआरपी बहुत कम है। हालांकि ऐसा भी नहीं कहा जा सकता कि मीडिया इसमें बिलकुल दिलचस्पी नहीं दिखाता। लेकिन आज मीडिया बाजार से बहुत अधिक प्रभावित है। ऐसे में कंटेंट तय करने के पहले समाचार पत्र, टीवी न्यूज चैनल और डिजीटल मीडिया अपने लाभ पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यही कारण है कि मीडिया ऐसी योजनाओं पर बहुत दिलचस्पी नहीं दिखाता। समाचार-पत्रों एवं चैनलों में इन विषयों पर एडवोटोरियल और इम्पैक्ट फीचर (पेड कंटेंट) अवश्य देखने को मिलते हैं। ■

यूपी मिशन शक्ति अभियान से अन्त्योदय

डॉ. प्रीता पंवार
(सेवानिवृत्त प्राचार्या, लेखिका एवं संपादक)

बढ़ता राजस्व समेत तमाम क्षेत्रों में आज यूपी सबसे आगे है। धर्म, क्षेत्र और जाति की राजनीति से हटकर यूपी ने विकास के प्रत्येक क्षेत्र में नए कीर्तिमान रचे हैं। इन्हीं योजनाओं में एक अत्यंत महत्वपूर्ण योजना है - यूपी मिशन शक्ति अभियान !

श्री योगी आदित्य नाथ जी 2017 में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने, उसके बाद उन्होंने 2022 में दोबारा मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। वे दुनिया के उन ताकतवर नेताओं में शुमार हैं जिनके तरीके और नियम दुनिया भर में चर्चित हैं। 2017 से पहले प्रदेश में न केवल कानून व्यवस्था जर्जर थी बल्कि प्रदेश में अकसर दंगे होते रहते थे। कई जिले तो ऐसे थे जिनके नाम से भी लोग डरते थे। राज्य में 2007 से 2012 के बीच 364 दंगे हुए, 2012 से 2017 के बीच 700 से अधिक दंगे हुए। यह श्री आदित्य नाथ योगी जी का पुरुषार्थ है जिसके कारण जिस यूपी को बीमारू राज्य माना जाता था, आज वो अग्रणी राज्यों की श्रृंखला में खड़ा है। योगी के शासनकाल में यूपी केंद्र की सभी फ्लैगशिप योजनाओं में अग्रणी है। बिजली, पानी, सड़क, एक्सप्रेस वे, मेट्रो, कानून व्यवस्था, सरकारी योजना, स्वरोजगार, पेय जल की आपूर्ति, हाइटैक पुलिस, बढ़ता राजस्व समेत तमाम क्षेत्रों में आज यूपी सबसे आगे है। धर्म, क्षेत्र और जाति की राजनीति से हटकर यूपी ने विकास के प्रत्येक क्षेत्र में नए कीर्तिमान रचे हैं। इन्हीं योजनाओं में एक अत्यंत महत्वपूर्ण योजना है - यूपी मिशन शक्ति अभियान !

यूपी मिशन शक्ति अभियान के अंतर्गत उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी की सरकार का लक्ष्य राज्य में महिलाओं के लिए सुरक्षा प्रदान करना है। राज्य में हुई घटनाओं के कारण महिलाओं के भीतर डर माहौल भी पैदा हुआ है, जिसके लिए इस योजना का शुरू करना आवश्यक है। उत्तर प्रदेश राज्य सरकार सार्वजनिक रूप से ग्राम पंचायत स्तर से लेकर औद्योगिक स्तर पर महिलाओं के लिए स्कूल और सरकारी संस्थानों कई विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करके लोगों के भीतर जागरूकता लायी जाएगी। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य प्रदेश की महिलाओं को सशक्त एवं आत्मनिर्भर बनाना है। इस अभियान के माध्यम से विभिन्न प्रकार के जागरूकता एवं ट्रेनिंग प्रोग्राम का संचालन किया जाता है। जिससे कि प्रदेश की महिलाओं को उनके अधिकारों को लेकर जागरूक बनाया जा सके। इस अभियान को प्रदेश के 75 जिलों में आरंभ किया गया था। इस योजना की संचालन की अवधि 6 महीने निर्धारित की गई थी। जिसके अंतर्गत इस योजना के दो चरण में विभाजित किया गया है जो कि यूपी मिशन शक्ति अभियान एवं ऑपरेशन शक्ति है। मिशन शक्ति अभियान का मुख्य उद्देश्य देश की महिलाओं को अपने अधिकारों को लेकर जागरूक करना है एवं ऑपरेशन शक्ति के अंतर्गत उन लोगों को सजा देने का प्रावधान है जिन्होंने महिलाओं के साथ किसी प्रकार का दुर्व्यवहार या अपराध किया है। अब इस योजना का तीसरा चरण लांच किया गया है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के द्वारा इस यूपी मिशन शक्ति अभियान को उत्तर प्रदेश की सभी महिलाओं को आत्मनिर्भर एवं सशक्त बनाने के उद्देश्य से शुरु किया गया है। 2 अप्रैल 2023 से मिशन शक्ति अभियान को महिलाओ से जुड़ी गतिविधियों को और सक्रिय करने एवं प्रभावी ढंग से संचालित करने के निर्देश दिए गए है। इस अभियान के अंतर्गत उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री जी के द्वारा स्कूल-कॉलेज, बाजार और भीड़भाड़ वाली जगहों पर विशेष अभियान चलाने के निर्देश दिए जायेंगे। मुख्यमंत्री जी के द्वारा गृह विभाग से 100 दिन का कार्य नियोजन समर्पित किया जायेगा।

75000 गरीब महिलाओं को जोड़ा जाएगा उद्यमिता से : महिलाओं को स्वलंबित बनाने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा एक नई मुहिम

का आरंभ किया गया है। अब महिलाओं के अंतर्गत उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए मिशन शक्ति अभियान के अंतर्गत 75 जिलों की 75000 महिलाओं को उद्यमिता से जोड़ने के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। यह प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से प्रदान किया जाएगा। इन शिविरों के माध्यम से महिलाओं को आत्मनिर्भर भी बनाया जा सकेगा। सभी प्रशिक्षणार्थियों को टूलकिट भी प्रदान की जाएगी। प्रशिक्षण समाप्त होने के पश्चात उद्यम स्थापित करने के लिए बैंकों से आसान किस्त पर लोन भी प्रदान कराया जाएगा। जिससे कि महिलाओं की वित्तीय जरूरतों को पूरा किया जा सके। इसके अलावा महिला उद्यमियों के लिए हेल्प डेस्क, मोबाइल एप एवं वेबसाइट भी आरंभ की जाएगी। एक जनपद एक उत्पाद योजना के चिन्हित उत्पादकों पर आधारित डाक टिकट और विशेष कवर का विमोचन भी इस अवसर पर किया जाएगा। मिशन शक्ति अभियान को महिलाओं एवं लड़कियों को जागरूक करने के उद्देश्य से आरंभ किया गया था। इसके अलावा महिलाओं के प्रति होने वाली हिंसा करने वाले लोगों की पहचान उजागर करना एवं महिलाओं को राज्य में सुरक्षित महसूस करवाना भी इस योजना का एक मुख्य उद्देश्य है।

महिलाओं को किया जाएगा उनके अधिकारों को लेकर जागरूक : प्रदेश की महिलाओं को जागरूक एवं सशक्त बनाने के लिए एवं उनको सरकार द्वारा आरंभ की गई विभिन्न प्रकार की कल्याणकारी योजनाओं से जोड़ने के लिए यूपी मिशन शक्ति अभियान का शुभारंभ किया गया है। अब महिलाएं इस योजना के माध्यम से स्वालम्बन की राह पर तेजी से बढ़ रही हैं। इस योजना के माध्यम से महिलाएं अपने अधिकारों के बारे में जागरूक हो रही हैं। वूमेन वेलफेयर डिपार्टमेंट द्वारा विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन मिशन शक्ति अभियान के अंतर्गत किया जाता है। जिसके माध्यम से प्रदेश की महिलाओं को जागरूक किया जाता है।

सितंबर 2021 में इस योजना के माध्यम से प्रदेश की महिलाओं को उनके कानूनी अधिकार से संबंधित जागरूकता प्रदान की जाएगी। 21 सितंबर 2021 तक महिलाओं को हिंसा से कानून एवं प्रावधानों से संबंधित जानकारी प्रदान की जाएगी। ग्राम सभा स्तर पर जागरूकता अभियान का भी संचालन किया जाएगा। जिससे कि प्रदेश की महिलाएं अपने अधिकारों को लेकर जागरूक हो सकें।

यूपी मिशन शक्ति योजना के लाभ तथा विशेषताएं :-

• यूपी मिशन शक्ति अभियान को उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा सन 2020 में शुरु किया था।

• इस योजना के माध्यम से प्रदेश की महिलाओ एवं बेटियों को स्वावलम्बी एवं सुरक्षित बनाने के लिए शुरु किया था।

• सरकार के द्वारा इस योजना के माध्यम से विभिन प्रकार की जागरूकता एवं ट्रेनिंग प्रोग्राम को शुरु किया जायेगा जिसके माध्यम से प्रदेश की महिलाओं को आत्मनिर्भर एवं सुरक्षित रखा जा सके।

• इस योजना को प्रदेश के 75 जिलों में लांच किया जायेगा।

• यूपी सरकार के द्वारा अब इस योजना के अंतर्गत तीसरा चरण शुरु हो जायेगा।

• यूपी मिशन शक्ति योजना सरकार के द्वारा 21 अगस्त 2023 को इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान, लखनऊ में होगा।

• पहले और दूसरे चरण में उल्लेखनीय कार्य करने वाले 47 जिलों की 75 महिलाओं को सरकार के द्वारा पुरस्कार प्रदान किया जायेगा।

• प्रदेश के राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एवं केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण भी शामिल होंगे।

• मिशन शक्ति अभियान 3.0 के अंतर्गत कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री निरीक्षक पेंशन योजना की 29.68 लाख महिलाओं के खाते में ₹451 की राशि प्रदान की जाएगी।

• इस कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री सुमंगला योजना की 1.55 लाख बेटियों के खाते 30. 12 करोड रुपए हस्त्रान्तरित की जाएगी।

• मिशन शक्ति कक्ष की शुरुआत 59 ग्राम पंचायत भवनों में किया जायेगा।

• तीसरे चरण के माध्यम से प्रदेश की महिलाओं को रोजगार धारा से जोड़ा जायेगा।

• इस योजना के अंतर्गत महिला बीट पुलिस अधिकारी की तैनाती भी करेंगी।

75 महिलाओं को किया जाएगा सम्मानित : इस अभियान के तीसरे चरण में बालिनी दुग्ध उत्पादक कंपनी की तर्ज पर नई कंपनियां भी स्थापित की जाएंगी। यह कंपनियां रायबरेली, सुल्तानपुर, अमेठी, सोनभद्र, चंदौली, मिर्जापुर, बलिया, गाजीपुर, गोरखपुर, देवरिया, महाराजगंज, कुशीनगर, बरेली, पीलीभीत, लखीमपुर खीरी और रामपुर जिले में स्थापित की जाएंगी। इस अभियान के अंतर्गत दिसंबर 2021 तक एक लाख नए स्वयं सहायता समूह बनाने का लक्ष्य भी निर्धारित किया गया है। प्रदेश के 75 जिलों में विभिन्न कार्यक्रम संचालित किए जाएंगे जिनकी गेस्ट ऑफ ऑनर महिला होंगी। करोना काल में उत्कृष्ट कार्य करने वाली 75 महिलाओं को सम्मानित किया जाएगा जो चिकित्सा, स्वास्थ्य कर्मी, महिला स्वयं सहायता समूह, महिला स्वयंसेवी संगठन आदि के क्षेत्र से हैं। इस अभियान के तीसरे चरण के अंतर्गत पुलिस सेवाएं महिलाओं के डोरस्टेप तक पहुंचाई जाएंगी। इसके अलावा पुलिस स्टेशन में वुमन हेल्प डेस्क की स्थापना की जाएगी जिसके माध्यम से एकल माँओं को सहायता प्रदान की जाएगी।

मिशन शक्ति अभियान में दिए जाने वाले कुछ मुख्य लाभ : यूपी मिशन शक्ति योजना के कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री निरीक्षक महिला पेंशन योजना के 29.68 लाख महिलाओं के खाते में 451 करोड रुपए की राशि हस्तांतरित की जाएगी। इसी के साथ 1.73 लाख से अधिक नए लाभार्थियों को भी इस

योजना से जोड़ा जाएगा। मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला की 1.55 लाख बेटियों के खाते में इस कार्यक्रम में 30.12 करोड़ रुपए हस्तांतरित किये जाएंगे। इसके अलावा 59 ग्राम पंचायत भवनों में मिशन शक्ति कक्ष की शुरुआत भी की जाएगी। तीसरे चरण में महिलाओं को रोजगार की मुख्यधारा से जोड़ा जाएगा। इस कार्यक्रम में महिला बीट पुलिस अधिकारियों की तैनाती भी की जाएगी। इसके अलावा 84.79 करोड़ रुपए की लागत से 1286 थानों में पिंक टॉयलेट का निर्माण भी किया जाएगा। महिला बटालियन के लिए 2982 पदों पर विशेष भर्ती भी की जाएगी। इसके अलावा इस कार्यक्रम में सभी पुलिस लाइन में बालवाड़ी क्रेच की स्थापना भी की जाएगी।

इस प्रकार यूपी मिशन शक्ति एक ऐसी योजना है जिसका उद्देश्य महिलाओं, विशेषकर समाज के अंतिम पायदान पर बैठी महिलाओं का चहुँमुखी विकास है। यूपी के माननीय मुख्यमंत्री जी का मानना है कि आर्थिक परिवर्तन के बिना सामाजिक बदलाव को हासिल नही किया जा सकता। यूपी मिशन शक्ति अभियान समाज की पिछड़ी, अशिक्षित, गरीब महिलाओं के लिए एक एकीकृत नागरिक केंद्रित जीवनपर्यन्त समर्थन योजना है। एकीकृत देखभाल, सुरक्षा, संरक्षण, पुनर्वास और सशक्तिकरण के जरिए महिलाओं के जीवन को सार्थक बनाने का प्रयास किया जाता है ।

यूपी मिशन शक्ति अभियान की दो उप योजनाएँ है - संबल और सामर्थ्य। संबल उपयोजना महिलाओं की सुरक्षा और संरक्षण के लिए है जबकि सामर्थ्य उपयोजना महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए है। विशेषरूप से यूपी मिशन शक्ति अभियान की सामर्थ्य उपयोजना समाज के अति महत्वपूर्ण घटक स्त्रियों के उत्थान का कार्य करती है। ये स्त्रियाँ वो हैं जो दरिद्रता, अशिक्षा व असुरक्षा के भंवर में फँसी हुईं हैं। और यहीं से समाज के अंत्योदय के पुनीत अनुष्ठान का शुभारंभ होता है। अंत्योदय का उद्देश्य यही है कि हम समाज में सबसे आखिरी व्यक्ति के उत्थान और विकास को सुनिश्चित करें। अंत्योदय एक मिशन है क्योंकि जबतक अंतिम व्यक्ति का उत्थान नहीं होता, तब तक सामाजिक विकास की समस्त परिकल्पनाएँ निरर्थक हैं। अंत्योदय में भूमिहीन मजदूर, ग्रामीण कारीगर, शिल्पकार, कुम्हार, चर्मकार, सीमांत किसान, झुग्गी झोपड़ियों में रहने वाले और दैनिक आधार पर अपनी जीविका चलाने वाले स्त्री पुरुष आदि आते हैं। सरकार की अंत्योदय योजना का उद्देश्य भारत के सबसे गरीब लोगों को उनकी दैनिक आवश्यकताओं के लिए भोजन और अन्य

यूपी मिशन शक्ति अभियान समाज के अंतिम पायदान पर बैठी महिलाओं के जीवन में बदलाव ला रही है और उन्हें राष्ट्र निर्माण में समान भागीदार बनाने का प्रयास कर रही है। यूपी मिशन शक्ति अभियान से अंत्योदय की ओर यह यात्रा निश्चित रूप से समाज के लिए अत्यंत वांछनीय व सराहनीय कदम है।

महत्वपूर्ण वस्तुओं को अत्यंत रियायती दरों पर उपलब्ध कराना है। किसी भी राष्ट्र की विकास यात्रा अंत्योदय से ही प्रारम्भ होती है। यूपी मिशन शक्ति अभियान अंत्योदय की उसी पावन परिकल्पना पर आधारित है जिसमें उस वर्ग को संबल व सामर्थ्य दिया जाता है जो समाज में सबसे कमजोर है। और यह तो निर्विवाद सत्य है कि गरीबों में स्त्रियों से अधिक कमजोर वर्ग कोई नही। स्त्रियाँ चहुँ तरफा शोषण, कुपोषण, अशिक्षा, अंधविश्वास और अनेकों प्रकार की हिंसाओं का शिकार रहीं हैं और आज भी हैं।

अतः यूपी के मुख्यमंत्री श्री आदित्यनाथ योगी जी ने मिशन शक्ति अभियान प्रारंभ कर के अंत्योदय की दिशा में एक ऐसी क्रांति का शुभारंभ किया है जो समाज में एक ऐसा वातावरण बनाने में सक्षम होगी जहाँ स्त्रियाँ सुरक्षित होंगी, आत्मनिर्भर होंगी, स्वस्थ होंगी और एक संतुलित परिवार का वहन करने में समर्थ भी। स्त्री वर्ग का यदि अंत्योदय होता है तो समाज का विकास होना निश्चित है। स्त्री परिवार की धुरी कहलाती है और समाज परिवारों से ही बनता है। यही कारण है कि यूपी में मिशन शक्ति अभियान को अंत्योदय से जोड़ा गया है। यूपी के मिशन शक्तिअभियान के तहत उज्जवला योजना, स्वाधारगृह और कामकाजी महिला हॉस्टल, मातृ वंदना योजना, महिला हेल्पलाइन, नारी अदालतें, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ जैसी मौजूदा योजनाओं को भी रखा गया है।

इस प्रकार यूपी मिशन शक्ति अभियान अंत्योदय से जुड़ी मिशन मोड में एक योजना है जिसका उद्देश्य महिला सुरक्षा, संरक्षण और सशक्तिकरण के लिए समर्थन को मजबूत बनाना है। इस योजना के तहत महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने, हिंसा और खतरे से मुक्त माहौल में अपने मस्तिष्क और शरीर के बारे में स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने को प्रेरित किया जाएगा। इस अभियान से महिलाओं के कौशल विकास, क्षमता निर्माण, वित्तीय साक्षरता, आसान ब्याज पर पैसे प्राप्त करने पर उनकी पहुँच और महिला श्रम बल की भागीदारी को प्रोत्साहित किया जाएगा।

यूपी मिशन शक्ति अभियान समाज के अंतिम पायदान पर बैठी महिलाओं के जीवन में बदलाव ला रही है और उन्हे राष्ट्र निर्माण में समान भागीदार बनाने का प्रयास कर रही है। यूपी मिशन शक्ति अभियान से अंत्योदय की ओर यह यात्रा निश्चित रूप से समाज के लिए अत्यंत वांछनीय व सराहनीय कदम है। जिस दिन घोर गरीबी, शोषण, कुपोषण और हिंसा के मकड़जाल से निकलकर स्त्री सामाजिक और राष्ट्रीय विकास की प्रणेता बनेगी उस दिन ही अंत्योदय होगा। निश्चित रूप से श्री आदित्यनाथ योगी जी का मिशन शक्ति अभियान अंत्योदय की उस क्रांति को कार्यान्वित व साकार मूर्त देने वाला एक अति महत्वपूर्ण कारक भी है और कारण भी। ■

प्रणय विक्रम सिंह
(वरिष्ठ पत्रकार)

उत्तर प्रदेश अन्त्योदय से समाजोदय

हाशिए पर खड़े व्यक्ति, समुदाय का ऐसा सशक्तिकरण जो समाज की मुख्यधारा के साथ उसको कदमताल करने की सामर्थ्य प्रदान करे, एक लोकतांत्रिक, कल्याणकारी राज्य के लिए विकास का आदर्श मानक है। नर सेवा में ही नारायण सेवा का भाव देखने वाली भारतीय संस्कृति में विकास एक आयामी न होकर बहुआयामी होता है। 'सबका साथ, सबका विकास' उसकी एक सरल व्याख्या है।

विकास के आलोक से जन-जन आलोकित हों, उसमें सहभागी बनें, यही अंत्योदय का पथ है। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार 'अन्त्योदय से आत्मनिर्भर उत्तर प्रदेश' की संकल्पना की सिद्धि की ओर बढ़ती दिखाई पड़ रही है। 'रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफॉर्म' मंत्र को आत्मसात कर योगी सरकार ने धीरे-धीरे, नियोजित और सधे हुए कदमों के साथ विकास की जो अविराम यात्रा प्रारम्भ की है, उसमें गांव, गरीब, किसान, नौजवान, उपेक्षित, वंचित, महिला, वृद्ध सभी सहयात्री हैं।

सभी नागरिकों के सपनों को पूरा करने, उनके समग्र विकास के लिए सरकार को जिस राजनीतिक इच्छाशक्ति और Think Big, Dream Big, Act Big जैसे व्यापक फलक वाले नजरिए की जरूरत होती है, वह योगी आदित्यनाथ की सरकार में भरपूर मात्रा में मौजूद है। एक तरफ छह सक्रिय एवं सात निर्माणाधीन एक्सप्रेस-वे का जाल है तो दूसरी तरफ पगडंडी पर फैलता रोजगार का प्रकाश है। अपराध के प्रति जीरो टालरेंस का भाव है तो निर्धनों के उन्नयन के लिए योजनाओं की भरमार है।

अब देखिए न, 'अपना पक्का घर' हर आदमी का स्वप्न होता है। योगी सरकार ने पूर्व की सरकार की भांति अपने लिए बंगले तो नहीं बनवाए किंतु महज 6 वर्षों में 54 लाख गरीबों को निःशुल्क पक्के आवास जरूर दिए हैं। यही नहीं राज्य में 'स्वच्छ भारत मिशन' के अन्तर्गत 2 करोड़ 61 लाख शौचालय भी बनाए गए हैं। यह दोनों योजनाएं निर्धन परिवारों के जीवन में सम्मान और सुरक्षा का भाव लायी हैं।

देखा जाए तो समाज के सबसे अंतिम पायदान पर स्त्री खड़ी है। सदियों से वह वंचना की शिकार है। कोख से कब्र तक का सफर उसके लिए कष्टकारी रहा है। किंतु योगी सरकार अपनी योजनाओं को द्वारा उसके जीवन के हर पड़ाव के साथ खड़ी नजर आती है। जैसे प्रधानमंत्री मातृ वन्दन योजना से 36 लाख 16 हजार माताएं लाभान्वित हुईं और मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना का छह लाख 94 हजार बेटियों को लाभ प्राप्त हुआ। मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना से एक लाख 52 हजार से अधिक कन्याओं का विवाह अनुदान 35,000 से बढ़ाकर 51,000 किया गया तो एक करोड़ 80 लाख बेटियों को बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ योजना का लाभ मिला है। इसके साथ ही स्नातक तक निःशुल्क शिक्षा की सौगात के साथ 771 कस्तूरबा विद्यालयों की स्थापना के द्वारा लड़कियों की शिक्षा क्षेत्र में नया अरुणोदय करने का प्रयास हुआ है। दो लाख से अधिक महिलाएं पीएम स्वनिधि योजना से लाभान्वित हुई हैं, यह संख्या पूरे देश में सबसे अधिक है। नारी सुरक्षा, सम्मान और स्वावलंबन को समर्पित ये कार्य अंत्योदय नहीं तो क्या हैं?

सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का शत प्रतिशत लाभ सीधे लाभार्थियों को मिले, उसके लिए योगी सरकार ने जनधन खातों के प्रति आमजन को बहुत जागरुक किया। परिणामतः प्रदेश में आठ करोड़ 50 लाख से अधिक जनधन बैंक खाते खोले गए हैं, आज एक क्लिक में करोड़ों लाभार्थियों को पीएम किसान सम्मान निधि, उज्ज्वला योजना, निराश्रित महिला, दिव्यांग और वृद्धों को पेंशन समेत अनेक योजनाओं का पूरा लाभ मिल रहा है।

ध्यातव्य है कि योगी सरकार जानती थी कि निर्धनों के जीवन में आशा, विश्वास और संभावना का उजाला रोजगार की रश्मियों से ही आ सकता है। रोजगार के लिए उद्यम का विकास आवश्यक है। प्रदेश सरकार द्वारा अधिकाधिक उद्यमों की स्थापना हेतु अनुकूल वातावरण का सृजन किया गया है। सरकार के प्रयासों से वित्तीय वर्ष 2022–2023 में तीन लाख 95 हजार से अधिक एमएसएमई (छोटे और मझौले उद्योग) पंजीकृत हुई जिसमें 25 लाख 64 हजार से अधिक रोजगार का सृजन हुआ। एक जनपद एक उत्पाद वित्त पोषण योजनान्तर्गत एक लाख 35 हजार से अधिक

व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त हुआ। एक जनपद, एक उत्पाद प्रशिक्षण एवं टूलकिट वितरण योजना के अंतर्गत अब तक 83,473 से अधिक हस्तशिल्पियों/पारम्परिक कारीगरों को प्रशिक्षण एवं टूलकिट वितरण किया गया। कोविड कालखंड में हर व्यक्ति इस बात को जानता है कि, कैसे उत्तर प्रदेश के 'एक जनपद, एक उत्पाद' (ODOP) कार्यक्रम ने प्रदेश आने वाले हर कामगार व श्रमिक को कार्य देने का कार्य किया, उन्हें बेरोजगार नहीं होने दिया।

युवाओं को निःशुल्क तकनीक प्रशिक्षण प्रदान कर उन्हें हुनरमंद बनाना ताकि वे रोजगार के अच्छे अवसरों को प्राप्त कर सकें, यही तो अंत्योदय का सुपथ है।

दीगर है कि उत्तर प्रदेश कौशल विकास मिशन द्वारा विगत छह वर्षों में 12 लाख 50 हजार से अधिक युवाओं को विभिन्न प्रकार के अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में पंजीकृत किया गया है। प्रमाणीकृत हुए युवाओं में से चार लाख 88 हजार लोगों को विभिन्न प्रतिष्ठित कम्पनियों में सेवायोजित कराया गया है। प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के अन्तर्गत अब तक 17,559 इकाइयां स्थापित करते हुए एक लाख 96 हजार से अधिक लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए गए हैं। मुख्यमंत्री ग्रामोद्योग रोजगार योजना के अन्तर्गत अब तक 4837 इकाइयां स्थापित करते हुए 88,808 लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए गए।

शहरों में रोजगार और स्वरोजगार की दिशा में योगी सरकार ने अभूतपूर्व कार्य किया है। स्ट्रीट वेंडर जिन्हें पहले कोई नहीं पूछता था, वह

उ.प्र. की योगी सरकार की ऐसी दर्जनों योजनाएं हैं जिनके द्वारा निर्धन और वंचित समाज के समग्र उत्थान का संकल्प साकार हो रहा है और वे सभी उ.प्र. की विकास यात्रा में सहभागी बन रहे हैं। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश बिना किसी भेदभाव के सभी पर एक समान पड़ता है तभी प्रकृति की व्यवस्था सुचारू रूप से संचालित हो पाती है, ठीक वैसे ही जब विकास रूपी प्रकाश से समूचा समाज आलोकित होता है।

हर जगह प्रताड़ित होते थे, शोषण का शिकार होते थे, सरकार ने प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना में रेहड़ी, पटरी और ठेला लगाने वाले 10,33,132 स्ट्रीट वेन्डर्स को 1,190 करोड़ रुपए का ऋण देकर उन्हें प्रोत्साहित किया है। साथ ही प्रदेश सरकार ने 49,242 स्वयं सहायता समूहों का गठन कर 4,93,000 शहरी गरीब परिवारों को स्वरोजगार से जोड़ा है।

धनाभाव के कारण लाखों नागरिक इलाज से वंचित रह जाते हैं। कुछ कालकल्वित हो जाते हैं तो कुछ रोग को जिंदगी भर झेलने के लिए मजबूर रहते हैं। कुछ लोग इलाज तो कराते हैं लेकिन उनका खेत-खलिहान गिरवी हो जाता है, घर-मकान-दुकान बिक जाता है। जिंदगी कर्ज तले दब जाती है, फिर कभी उबर नहीं पाती। ऐसे लोगों के लिए योगी सरकार किसी फरिश्ते से कम नहीं हैं। आज 'आयुष्मान भारत' कार्ड धारक पांच लाख रुपए की धनराशि तक मुफ्त इलाज करा सकते हैं। प्रदेश के लगभग सात करोड़ लोग इस योजना से आच्छादित भी हैं। जो लोग इसके अंतर्गत लाभांवित नहीं हो पाए ऐसे पात्र 50 लाख से अधिक लोगों को 'मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना' के अंतर्गत बीमा कवर प्रदान किया गया है। मतलब अंत्योदय की भावना को पोषित करती इस योजना के कारण अब गरीब तबके के इलाज के लिए धनाभाव रोड़ा नहीं बनेगी।

शिक्षा के बगैर किसी भी समाज का उन्नयन संभव नहीं है। किंतु गुणवत्ता परक शिक्षा के लिए होने वाले व्यय को संभाल पाना निम्न आय वर्ग, निम्न मध्य वर्ग के लिए दिन में तारे देखने जैसा है। उ.प्र. की योगी सरकार के द्वारा एक लाख 38 हजार सरकारी स्कूलों का कायाकल्प, चार नए राज्य विश्वविद्यालय, 51 नए राजकीय महाविद्यालय, 28 इंजीनियरिंग कॉलेज, 26 पॉलीटेक्निक, 79 आई.टी.आई. 250 नए इंटर कॉलेज और 771 कस्तूरबा विद्यालयों की स्थापना से निर्धन तबके को निकालने की दिशा में बढ़ा महत्वपूर्ण कदम है। श्रमिकों के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा मुहैया कराने के लिए 18 मंडलों में अटल आवासीय विद्यालयों की स्थापना भी उसी भावना का विस्तार है।

मुख्यमंत्री अभ्युदय योजना के तहत प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए सरकार द्वारा संचालित मुफ्त कोचिंग के सुखद परिणाम दिखाई पड़ने लगे हैं।

उ.प्र. की योगी सरकार की ऐसी दर्जनों योजनाएं हैं जिनके द्वारा निर्धन और वंचित समाज के समग्र उत्थान का संकल्प साकार हो रहा है और वे सभी उ.प्र. की विकास यात्रा में सहभागी बन रहे हैं। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश बिना किसी भेदभाव के सभी पर एक समान पड़ता है तभी प्रकृति की व्यवस्था सुचारू रूप से संचालित हो पाती है, ठीक वैसे ही जब विकास रूपी प्रकाश से समूचा समाज आलोकित होता है तभी समाज संतुलित रूप से गति कर पाता है। एक योगी से अधिक संतुलन भला कौन बना सकता है? परिणामतः योगी सरकार की हर नीति में अन्त्योदय का भाव परिलक्षित होता है। उत्तर प्रदेश सरकार का हर कार्य 'अन्त्योदय से समाजोदय' की भावना को व्यक्त करता है। ■

अन्त्योदय से प्रेरित योगी सरकार

डॉ. सरवन सिंह बघेल
(लेखक)

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी कहते हैं भारत में एकता और एकीकरण अर्थात् एकात्मता और अन्त्योदय के माध्यम से विकास को तेज गति दी जा सकती है। हमें आज समझना होगा कि मत और उपासना हमारे लिए 'सेकेंडरी' है। हमें आज देश को सर्वोपरि रखने की आवश्यकता है। वो कहते हैं कि भारत को विकसित बनाने के लिए आवश्यक है कि हम अपनी विरासत पर गौरव की अनुभूति करें। गुलामी के अंशों से मुक्त हों। एकता और एकीकरण का आह्वान कर भारत के सर्वांगीण विकास और सुरक्षा की जिम्मेदारी लेकर सजगता, सहजता, सरलता, समझदारी को साथ लेकर तेजी के साथ कार्य करें।

योगी आदित्यनाथ जी का मत है कि, ''एकता और एकीकरण इस रूप में हों कि पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, धर्म, पंथ, जाति, मत, मजहब, क्षेत्र और भाषा नहीं बल्कि भारत माता हम सबके लिए सर्वोपरि हो। यही हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। देश सेवा हमारे लिए प्रथम हो, मत और उपासना हमारे लिए हमेशा द्वितीय स्थान पर होनी चाहिए। वह हमारा व्यक्तिगत विषय हो सकता है, लेकिन 'माटी को नमन, वीरों का वंदन' हमारा संकल्प होना चाहिए। वो कहते हैं कि विकसित भारत की परिकल्पना को साकार करने के लिए आगामी 25 वर्ष की व्यापक कार्ययोजना के साथ हम सभी को नए संकल्प, नए उत्साह और नई उमंग से जुड़ने का अवसर प्राप्त हो रहा है। हर भारतीय नागरिक का कर्तव्य है कि समाज व राष्ट्र के लिए कार्य वो हर आवश्यक कार्य करे। तन, मन, धन से माँ भारती की सेवा करें।

जब हम अन्त्योदय का विचार करते हैं तो हमें पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों को समझना होगा। वर्तमान की केंद्र सरकार और अन्य कई भाजपा शासित राज्य सरकारें पंडित जी के अन्त्योदय व एकात्म मानव दर्शन के विचार को लेकर विकास और सुरक्षा की नीति पर कार्य कर रही है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय के सम्बन्ध में कहते थे कि 'भारत में जब तक पंक्ति के अंतिम में खड़े व्यक्ति का उदय नही होगा, उसका विकास नही होगा तब तक भारत का सम्पूर्ण विकास संभव नही है। भारत के उदय के लिए पंक्ति के अंतिम व्यक्ति का उदय होना भी आवश्यक है।' वे अश्रुपूर्ण आँखों से आसूँ पोछने और उसके चेहरे पर मुस्कान को अन्त्योदय का पहला पायदान मानते थे। दीनदयाल जी के अन्त्योदय का आशय राष्ट्रश्रम से प्रेरित था। वे राष्ट्रश्रम को राष्ट्रधर्म मानते थे। अतः कोई भी श्रमिक वर्ग प्रथक नही हैं हम सभी राष्ट्र निर्माण मे श्रमिक की भूमिका निभा रहे है। उसी विचार को साकार करने का कार्य उत्तर प्रदेश की वर्तमान योगी सरकार अपनी विभिन्न नीतियों और योजनाओं से कर रही है।

किसी भी राज्य के विकास के लिए अहम् होता है निवेश। निवेश के लिए मुख्य बात होती है निवेशक की सुरक्षा और निवेश के लिए अनुकूल वातावरण और व्यवस्था। राज्य के नागरिकों के लिए भी सुरक्षा व्यवस्था का होना योगी जी पर विश्वास का प्रतीक है। उ. प्र. की कानून व्यवस्था को लेकर योगी जी सदैव सजग रहते है। वह कानून व्यवस्था का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि प्रदेश की सुरक्षा और कानून व्यवस्था के साथ खिलवाड़ करने की अनुमति किसी को नहीं दी जा सकती है। उत्तर प्रदेश में अब सुरक्षा के भाव ने यहां का परसेप्शन भी बदला है, आज प्रदेश की कानून व्यवस्था पर कोई सवाल नहीं खड़ा कर सकता है। कानून व्यवस्था के कारण विश्व के बड़े से बड़े निवेशक आ रहे हैं। धार्मिक पर्यटन की पहचान पूरे विश्व को आकर्षित कर रही है। कानून व्यवस्था के कारण आज एक नया काशी बना है, जहां लाखों पर्यटक आ रहे हैं। कानून व्यवस्था में सुधार होने से उत्तर प्रदेश में निवेशकों की संख्या बड़ी है। सुरक्षा और सुशासन से निवेश का उत्तम प्रदेश अब उत्तर प्रदेश बन रहा है। योगी आदित्यनाथ के प्रयासों से उत्तर प्रदेश में 36 लाख करोड़ के निवेश के लिए निवेशकों ने सरकार के साथ समझौता किया है, इस निवेश से प्रदेश के लगभग एक करोड़ नौजवानों को नौकरी की

व्यवस्था हो सकेगी, आज ये सब उस यूपी में हो रहा है जहां कभी कोई नहीं आना चाहता था। जिसे कभी अपराधों के नाम से भी जाना जाता था। विदेशी निवेशकों के मध्य भी उत्तर प्रदेश और योगी जी लोकप्रिय हो रहे हैं। आज इंफ्रास्ट्रक्चर के तौर पर भी प्रदेश की नई पहचान बन रही है। जहां साल 2017 तक प्रदेश में सिर्फ दो एयरपोर्ट ही क्रियाशील थे आज यहां 9 एयरपोर्ट बन गए हैं। देश के सबसे ज्यादा एक्सप्रेस वे राज्य के पास हैं। डिफेन्स कॉरिडोर जैसा सफल दांव यहाँ की वर्तमान योगी सरकार के द्वारा चला गया। 73 वें नेशनल सेम्पल सर्वे के अनुसार उत्तर प्रदेश में लगभग 90 लाख एमएसएमई हैं। जो देश में सर्वाधिक है। इनके जरिये परोक्ष रूप से लगभग 2 करोड़ लोगों को रोजगार मिलता है। उत्तर प्रदेश के पास कुल 11 प्रतिशत कृषि भूमि है। नई तकनीक और किसानों के प्रशिक्षण से उत्पादन के क्षेत्र में भी नए आयाम स्थापित कर रहा है उत्तर प्रदेश।

इन सभी बातों की प्रेरणा दीनदयाल उपाध्याय जी के विचारों से मिलती है। अन्त्योदय के सम्बन्ध में दीनदयाल जी ने कहा है कि राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए राष्ट्र के हर नागरिक के लिए कुछ मूलभूत बातों का होना अतिआवश्यक जैसे रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधा, सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा और संस्कार आदि। अन्त्योदय की भावना में ये सभी बातें निहित हैं। जब हम विकास की ओर दृष्टि करते हैं तो व्यक्ति का सुख उसका आधार बनता है। मगर दीनदयाल जी कहते हैं कि मेरी अवधारणा व्यक्ति के संबध में जैसी है वैसी ही राष्ट्र के सम्बन्ध में भी है। यहाँ पर वह धर्म की विवेचना करते हुए सर्वोदय की बात बताते हैं 'महर्षि कणाद ने सर्वांगीण उन्नति की व्याख्या करते हुए कहा था **'यतो भ्युदयनिःश्रेय स सिद्धिःस धर्मः'** जिस माध्यम से अभ्युदय अर्थात् भौतिक दृष्टि से तथा निःश्रेयसयानेआध्यात्मिक दृष्टि से सभी प्रकार की उन्नति प्राप्त होती है, उसे धर्म कहते हैं। उसी तरह गरीब के उत्थान के लिए किये गए प्रयासों को अन्त्योदय या सर्वोदय के भाव से प्रज्वलित करते हैं।

उत्तर प्रदेश की योगी जी की सरकार इन सभी संकल्पों को पूरा करने के लिए संकल्पित है। मुख्यमंत्री आर्थिक सहायता कोष से प्रतिदिन हजारों जरुरतमंदों को सहायता प्रदान की जाती है। जनता दर्शन के माध्यम से प्रतिदिन राज्य की जनता से सीधा संवाद करके उनकी सहायता के उचित प्रयास किये जाते हैं। IGRS पोर्टल से जनता की शिकायतों का निस्तारण करने का कार्य उत्तर प्रदेश शासन द्वारा किया जाता है। शिक्षा, रोजगार, नागरिक सुरक्षा, किसानों को सिचाई, उन्नत किस्म बीज वितरण, मकान, चिकित्सा आदि प्रकार की मुलभूत सुविधाओं पर विशेष ध्यान और कार्यवाई मुख्यमंत्री योगी जी के नेतृत्त्व में

पंडित दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय के सम्बन्ध में कहते थे कि 'भारत में जब तक पंक्ति के अंतिम में खड़े व्यक्ति का उदय नहीं होगा उसका विकास नहीं होगा तब तक भारत का सम्पूर्ण विकास संभव नहीं है। भारत के उदय के लिए पंक्ति के अंतिम व्यक्ति का उदय होना भी आवश्यक है।'

की जाती है। अंतिम छोर की चिंता और उनके विकास के लिए योगी आदित्यनाथ जी अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं।

'सर्वजन सुखाय का यह आदर्श' भारतीय संस्कृति की अनन्य विशेषता है - मानव मात्र का कल्याण। भारतीय संस्कृति का उद्देश्य है-

'सर्वे भवन्तु सुखिनःसर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत् ।।"

पंडित दीनदयाल जी के विचारों का केंद्र भी सर्वजन हिताय और सर्वजन सुखाय है। भारतीय संस्कृति का यह आदर्श अन्त्योदय की परिकल्पना मे परिभाषित होता है। सरकार द्वारा बनायी गयी नीतियों और योजनायों का लाभ सभी को होना चाहिए। समाज के सभी वर्ग इस सरकार की इन नीतियों और योजनाओं से लाभान्वित हो, यही शासन और प्रशासन का उद्देश्य होना चाहिए, इसी को सरकार की सफलता कहा जा सकता है। हमारी प्रगति का आंकलन सामाजिक पीढ़ी के सर्वोच्च पायदान पर पहुँचे व्यक्ति से नहीं यद्यपि समाज की अंतिम पंक्ति मे खड़े व्यक्ति से होगा। भारत की वर्तमान मोदी सरकार और राज्य की योगी सरकार अंतिम व्यक्ति को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य तेजी से कर रही है। पंडित दीनदयाल जी ने राष्ट्र व समाज को जोड़ने के लिए निरंतर संघर्ष किया है जिसका परिणाम वर्तमान समय मे दिखने लगा है। हमारी संस्कृति में मानव मात्र के कल्याण की बात निहित है, दीनदयाल जी ने इस तत्व को महत्त्व देते हुए अन्त्योदय को शासन के लक्ष्य के रूप में अवगत कराया है। देश में सभी वर्गों की सरकार एवं समाज से संतुष्टि व खुशी अपेक्षित है। यदि श्रम करने वाला श्रमिक वर्ग इनसे नाराज है तो राष्ट्र व समाज के विकास पथ पर चलने की परिकल्पना अधूरी ही रह जाएगी। इसके लिए पंडित जी कहते थे कि देश के हर नागरिक के हाथ में काम होना अनिवार्य है। बेरोजगारी से बचाव की दृष्टि से कर्मशीलता व कर्मचेतना एक सार्थक उपाय है। कर्मशीलता और कार्य दक्षता का विकास कर देश में बेरोजगारी और गलत कार्यों को रोका जा सकता है और इन प्रयासों के द्वारा राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित है। वर्तमान सरकार इन कार्यो पर अपना ध्यान केन्द्रित किये हुए है उसके प्रयास निरंतर इन कार्यो की सफलता की ओर अग्रेषित है।मगर यह सभी बाते सरकार पर ही निर्भर नहीं होनी चाहिए समाज और व्यक्तियों का भी इसमें योगदान होना चाहिए। उच्च, दलित, पिछड़ा, जनजाति, विमुक्त और खानाबदोश इनमें किसी में विकास, सामाजिक और भौतिक किसी भी प्रकार से भेदभाव नहीं होना चाहिए। स्वामी विवेकानंद जी की बात को वे हमेशा कहते थे कि इस देश को उठाने के लिए गरीबों, मछुआरों, बुनकरों और मजदूरों आदि को विकसित होने दो। भेदभाव रहित समाज की रचना करो। एकात्म भाव को विकसित होने दो। सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय के मंत्र पर व्यक्ति का विकास करो। ■

माफिया मुक्त उत्तर प्रदेश में सुशासन की बयार

मृत्युंजय दीक्षित
लेखक एवं स्तम्भकार

उत्तर प्रदेश में पहले गरीबों व्यापारियों की जमीनों के साथ-साथ माफिया सरकारी भूमि पर भी कब्जा कर लेते थे लेकिन अब माफिया से मुक्त कराई गई जमीनों पर गरीबों के लिए आवास बन रहे हैं, यह सुशासन का परिणाम है। सुशासन के कारण ही प्रदेश भर में एक्सप्रेस वे के बढ़ते नेटवर्क का समुचित उपयोग हो पा रहा है और आर्थिक विकास को गति मिल रही है।

प्रदेश में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में भाजपा गठबंधन की पूर्ण बहुमत की सरकार बनने के बाद से प्रदेश के जनमानस में सुरक्षा की भावना तो बढ़ी ही है। सुशासन की बयार बहने के कारण प्रदेश सरकार पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अन्त्योदय के विचारों को मूर्त रूप देने का कार्य भी सफलतापूर्वक कर रही है।

विगत दिनों राजधानी लखनऊ में विश्व बैंक के दल ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से भेंट की और प्रदेश के समग्र विकास के प्रयासों की सरहाना करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश तेजी से बदल रहा है। अवस्थापना विकास, औद्योगिकीकरण, कूड़ा निस्तारण, गरीबी उन्मूलन, नियोजित शहरीकरण, पर्यावरण संरक्षण आदि के क्षेत्र में पिछले वर्षों में निरंतर प्रगति हो रही है। विश्व बैंक के कार्यकारी निदेशक परमेश्वरन अय्यर ने बताया कि महाराष्ट्र और गुजरात के बाद विश्व बैंक का दल उत्तर प्रदेश आया है। उन्होंने कहा कि विश्व बैंक का मिशन सदा से गरीबी उन्मूलन का रहा है किन्तु अब पर्यावरण संरक्षण पर भी हमारा विशेष ध्यान है।

प्रदेश में नीति आयोग के ताजा आंकड़े भी इस बात का प्रमाण दे रहे हैं कि सरकार द्वारा चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं के बल पर प्रदेश के गरीबों का आर्थिक विकास हो रहा है और उन्हें सरकारी योजनाओं का लाभ मिल रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ आंकड़ों के साथ दावा कर रहे हैं कि उत्तर प्रदेश अपनी साढ़े पांच करोड़ आबादी को गरीबी रेखा से बाहर लाने में सफल रहा है। प्रदेश में 96 लाख से अधिक एमएसएमई इकाईयाँ संचालित हैं जो प्रदेश में रोजगार सृजन के साथ ही इसको निर्यात का केंद्र बना रही हैं। विगत छह वर्ष में प्रदेश ने अपना निर्यात दो गुणा करने में सफलता पाई है। मुख्यमंत्री का कहना है कि विश्व बैंक के साथ उत्तर प्रदेश का जुड़ना प्रदेश के लिए लाभकारी और फलदायी साबित होगा।

प्रदेश में अब माफियाओं का स्वागत-सत्कार नहीं अपितु निवेशकों, उद्योगपतियों और पर्यटकों का स्वागत-सत्कार होता है। योगी आदित्यनाथ के पुनः मुख्यमंत्री बनने के बाद वर्ष 2023 के फरवरी माह में आयोजित वैश्विक निवेशक सम्मलेन (ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट - जी. आई.एस.) में 96 लाख करोड़ रुपये से अधिक के निवेश प्रस्ताव आये थे जो एक रिकॉर्ड है। अब उन निवेश प्रस्तावों को

धरातल पर उतारने का काम चल रहा है। मुख्यमंत्री का यह भी कहना है कि अब प्रदेश की अर्थव्यवस्था परिवारवाद, जातिवाद और भ्रष्टाचार से मुक्त होकर अगले पांच वर्ष में एक ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की ओर बढ़ रही है।

हाल ही में एसबीआई की एक इकोरैप रिपोर्ट आई है जिसके अनुसार गुड गवर्नेंस के कारण 2027 तक जहाँ भारत विश्व की तीसरी बड़ी अर्थवयवस्था बनेगा, वहीं दूसरी तरफ उत्तर प्रदेश की जीडीपी नार्वे के बराबर हो जाएगी। आज प्रदेश के दस जिले ऐसे हो गये हैं जो विभिन्न क्षेत्रों में लगातार विकास कर रहे हैं। इन जिलों में नोएडा प्रथम, लखनऊ व आगरा दूसरे तीसरे नंबर पर विराजमान हैं। सरकारी नीतियों और उनके सही क्रियान्वयन के कारण प्रदेश के जिन जिलों की तस्वीर बदल रही है उसमें सीतापुर, संत कबीर नगर, कौशाम्बी, हमीरपुर, सोनभद्र जिले सम्मिलित हैं। कृषि, वन उपज, शिक्षा, स्वास्थ्य, खेल, रक्षा, खनन निर्माण, बिजली, जलापूर्ति, कारोबार उत्पाद, घर का स्वामित्व, बैंकिंग व व्यापारिक सेवाएं और लोक प्रशासन इस रैंकिंग का आधार हैं।

सुदृढ़ कानून व्यवस्था से प्रदेश की तस्वीर लगातार बदल रही है। प्रदेश में योगी सरकार बनने के बाद अपराध और अपराधियों के प्रति जीरो टालरेंस की नीति अपनायी गयी जिससे प्रदेश में विकास का वातावरण तैयार हुआ है। प्रदेश के खूंखार माफियाओं को कानून के दायरे में लाकर उनसे अब तक 66575 हेक्टेयर जमीन मुक्त कराई गयी है और इस भूमि पर गरीबों के लिए आवास बनाये जा रहे हैं। इस अभियान का प्रारंभ प्रयागराज से हो चुका है जहां माफिया अतीक अहमद की जमीनों पर बनाये गये 76 फ्लैटों की चाबी गरीबों को दी गयी है। राजधानी लखनऊ में मुख्तार अंसारी के गुर्गे से आजाद करायी गई जमीन पर भी आवास बनाये जाने का निर्णय लिया गया है।

प्रदेश में प्रधानमंत्री आवास योजना के सफल क्रियान्वयन के माध्यम से जहाँ एक ओर नारी का सशक्तीकरण हो रहा है वहीं युवाओं व श्रमिकों को रोजगार के अवसर प्राप्त हो रहे हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 74 प्रतिशत से अधिक घरों का स्वामित्व या तो अकेले या संयुक्त रूप से महिलाओं के पास है। घर के स्वामित्व के माध्यम से महिलाओं के सशक्तीकरण ने घरेलू आर्थिक निर्णयों में उनकी भागीदारी बढ़ाई है।

विगत दिनों राजधानी लखनऊ में विश्व बैंक के दल ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से भेंट की और प्रदेश के समग्र विकास के प्रयासों की सरहाना करते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश तेजी से बदल रहा है। अवस्थापना विकास, औद्योगिकीकरण, कूड़ा निस्तारण, गरीबी उन्मूलन, नियोजित शहरीकरण, पर्यावरण संरक्षण आदि के क्षेत्र में पिछले वर्षों में निरंतर प्रगति हो रही है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का कहना है कि पहले गरीबों व्यापारियों की जमीनों के साथ साथ माफिया सरकारी भूमि पर भी कब्जा कर लेते थे लेकिन अब माफिया से मुक्त कराई गई जमीनों पर गरीबों के लिए आवास बन रहे हैं, यह सुशासन का परिणाम है। सुशासन के कारण ही प्रदेश भर में एक्सप्रेस वे के बढ़ते नेटवर्क का समुचित उपयोग हो पा रहा है और आर्थिक विकास को गति मिल रही है। प्रदेश में छह एक्सप्रेस वे पर आगमन हो रहा है जबकि सात का निर्माण कार्य जारी है। महाकुंभ 2025 से पूर्व ही 12 जिलों से होकर गुजरने वाला 594 किमी लंबा गंगा एक्सप्रेस वे बनकर तैयार हो जाएगा। वर्ष के अंत तक गोरखपुर लिंक एक्सप्रेस वे भी बनकर तैयार हो जाएगा।

प्रदेश में धार्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पर्यटन को महत्व दिया जा रहा है जिसके कारण प्रत्येक तीर्थक्षेत्र चाहे छोटा हो या बड़ा तीर्थयात्रियों की संख्या तेजी से बढ़ी है। वहीं अयोध्या, मथुरा और काशी में श्रद्धालुओं की संख्या रिकॉर्ड तोड़ रही है। अयोध्या में भव्य राम मंदिर निर्माण पूरा हो जाने के बाद इसके बहुगुणित होने की अपेक्षा है।

योगी सरकार बनने के बाद प्रदेश में आए बदलाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर है। योगी जी का हर जिले को मेडिकल कॉलेज देने का लक्ष्य है। हर गांव तक सड़क और परिवहन सेवा पहुंचाई जा रही है। प्रदेश का प्रशासन भ्रष्टाचार मुक्त पारदर्शी बनाने के लिए व्यवस्थाओं को डिजिटल किया जा रहा है। युवाओं के लिए अनेक योजनाएं संचालित की जा रही हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ प्रदेश के लिए निरंतर उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। ■

सबका साथ, सबके विकास का विचार लेकर चले थे दीनदयाल जी

आशीष कुमार 'अंशु'
स्वतंत्र लेखक

हम विदेशी परिस्थिति एवं विदेशी चित्त में उत्पन्न विचारों का अध्ययन तो करें, किंतु स्वतंत्र भारत की विचारधारा का स्रोत तो भारतीय चित्त ही होना चाहिए।"

भारतीय समाज से यह आह्वान करने वाले पं. दीनदयाल उपाध्याय अपनी विचारधारा 'भारतीय नैरेटिव सर्वोपरी' के अपने समय के सबसे बड़े ब्रांड अम्बेस्डर थे। अपनी विचारधारा को पुष्ट करने के लिए पत्रों का संपादन, प्रकाशन, स्तंभ लेखन, पुस्तक लेखन उनकी रुचि का विषय था। उन्होंने अपनी बात समाज के बीच ना सिर्फ लिखकर बल्कि एक प्रखर वक्ता बनकर भी पहुंचाई। इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक की तरफ बढ़ते हुए आज विचारधारा के नए रंगरुट विभिन्न फेस्टीवल्स और सोशल मीडिया लाइव में बार बार इको सिस्टम और नैरेटिव की बात करते हुए दिखाई देते हैं। दीनदयाल जी जब इस विचार के साथ राष्ट्र प्रबोधन का संकल्प लेकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े, देश आजाद भी नहीं हुआ था। कांग्रेस जो राष्ट्रवादी विचार के साथ खड़ी हुई थी, धीरे धीरे अपने विचार से दूर जा रही थी। उस पर पंडित जवाहर लाल नेहरू की समाजवादी का विचारधारा का असर साफ दिखाई देने लगा था।

कांग्रेस पर हमेशा रहा लंदन का प्रभाव : तथ्य यह भी है कि कांग्रेस को बनाने और गढ़ने वाले एओ ह्यूम थे। इसलिए कांग्रेस के ऊपर लंदन का प्रभाव हमेशा रहा। उसी प्रभाव का असर था कि देश की आजादी की तारीख तय करते हुए ब्रिटेन की पसंद को प्राथमिकता दी गई, 15 अगस्त वही तारीख है जब द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापान ने हार मानकर आत्मसमर्पण (15 अगस्त 1945) किया था। अब वैश्विक परीप्रेक्ष्य में जब भी भारत की आजादी की तारीख का जिक्र होता है, उसके साथ ब्रिटेन के सामने जापान के घुटने टेकने की बात भी आ ही जाती है। जबकि उस समय के कई ज्योतिषियों ने 15 अगस्त को अपशकुन भी बताया था। सिर्फ अंग्रेज हुक्मरानों को खुश करने के लिए जवाहर लाल नेहरु ने बंटवारे की बात और उसकी तारीख को स्वीकार किया। इतना ही नहीं, पंडित नेहरू प्रधानमंत्री बनने की इतनी जल्दी में थे कि अंग्रेज सरकार के अफसर भारत की आजादी के बाद भी भारत में हुक्मरान बनकर बैठे रहे, उन्हें फर्क नहीं पड़ा। लुई माउंटबेटन आजाद भारत के पहले गवर्नर जनरल बनाए गए। मतलब एक अंग्रेज आजादी मिलने के बाद भी प्रधानमंत्री नेहरू की सरकार में भारत का गवर्नर जनरल बनाया गया। बात इतने भर की नहीं थी, 03 जून 1947 को वायसराय लुई माउंटबेटन ने बताया कि भारत विभाजन पर भारत और पाकिस्तान में सहमति बन गई है। यह सुनने के बाद वहां मौजूद कांग्रेस के सभी नेताओं ने खूब ताली बजाई। उन्हें मानो भारत के बंटवारे का कोई दुख ही नहीं था। पिछले दिनों पंडित नेहरू की विरासत संभाल रहे कांग्रेस के युवराज राहुल गांधी ने जब भारत मां की हत्या की बात की तो सारे कांग्रेसी ताली बजा रहे थे। भारत के बंटवारे और भारत मां की हत्या की बात पर ताली

दीनदयालजी ने स्वयं स्वीकार की। भारतीय जनसंघ की पहली पीढ़ी के सभी कार्यकर्ता इस काम में लगे। 1959 का पूना अभ्यासवर्ग, 1964 का ग्वालियर अभ्यास वर्ग तथा 1964 के संघ शिक्षा वर्गों का इस दृष्टि से विशेष महत्व है। इन वर्गों में परिपक्व हुये विचारों को दीनदयाल जी ने सिद्धांत और नीति प्रलेख में 'एकात्म मानववाद' नाम से प्रस्तुत किया।

बजाने वाली कांग्रेसी मानसिकता का विरोध दीनदयालजी ने आजीवन किया। इस विचार के प्रसार के लिए उन्होंने संघर्ष किया। जब कांग्रेस जैसी राष्ट्रवादी पार्टी पंडित जवाहर लाल नेहरू के प्रधानमंत्री बनने के बाद वाम और समाजवाद की राह पकड़ चुकी थी। नेहरू से लेकर बाद में आई तमाम कांग्रेसी सरकारें पश्चिम की तरफ ही देखती रही। भारतीय शासन से लेकर शिक्षा और संस्कृति पर पश्चिम का प्रभाव साफ दिखने लगा। ऐसे में राष्ट्रवादी विचार को लेकर चलने वाले हर एक व्यक्ति को दबाने की हर तरह से कोशिश की गई। किसी भी देश की राजनीतिक निष्ठाएं एक रात में नहीं बदलती। उसे बदलने में दशकों और कई बार सौ साल भी लगते हैं। दीनदयाल उपाध्याय, डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी से लेकर अटल बिहारी वाजपेयी, नरेंद्र मोदी तक पहुंची यह राजनीतिक विचार यात्रा साधारण नहीं है। इस विचार यात्रा में शामिल और अपना जीवन खपाने वाले विचारकों और प्रचारकों के साथ साथ लाखों अनाम वैचारिक संघर्ष में शामिल स्वयंसेवकों और वैचारिक मित्रों को अब याद किया जाना चाहिए।

सोशल मीडिया युग में दीनदयाल जी के विचार की प्रासंगिकता : आजादी के अमृत महोत्सव में देश ने उन क्रांतिकारियों को देश भर में तलाशने का एक महत्वपूर्ण टास्क अपने जिम्मे लिया, जिन्होंने इस राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया लेकिन उनका जिक्र हमारे टेक्स्ट बुक या आजादी दीलाने वाले योद्धाओं की कहानियों में शामिल नहीं हो पाया। उनकी कहानी अपने जिले अथवा कस्बे में सीमट कर रह गई। उन्हें राष्ट्रीय पटल पर लाने का काम आजादी के अमृत महोत्सव में हुआ है। असम के लाचित बरफूकन हो या फिर झारखंड के सिधु कान्हू और बिरसा मुंडा या फिर छत्तीसगढ़ के गुंडा धूर, अब देश इन नामों से परिचित हो रहा है।

आज के इंस्टाग्राम, एक्स संदेश, यू ट्यूब लाइव के सोशल मीडिया युग में दीनदयालजी के विचार की प्रासंगिकता पर यदि हम विचार करें तो बीते आठ सालों में एक व्यापक अंतर दिखाई देता है। वे जिस विचार की श्रृंखला खड़ी करके गए थे, वे आज होते तो देखकर खुश ही होते कि उनके द्वारा लगाया गया बिरवा, अब वटवृक्ष हो गया है। उनका विचार आगे की तरफ बढ़ रहा है और भारतीयता के विचार को छोड़कर पश्चिम की तरफ देखने वाला कांग्रेस सत्ता के साथ अपनी चमक के साथ दमकता रहा लेकिन ऐसे समय में भरोसा करना कठिन है कि दीनदयाल उपाध्याय जैसे साधारण कद-काठी और सामान्य से दिखने वाले मनुष्य ने अंग्रेजों के जाने के बाद भारत की सत्ता पर काबिज अंग्रेजियत से भरी वामपंथी इको सिस्टम वाली कांग्रेसी सरकार के चुनौती को स्वीकार किया और उन्होंने भारतीय राजनीति और समाज को एक ऐसा वैकल्पिक विचार और दर्शन प्रदान किया, जिससे प्रेरणा लेकर हजारों युवाओं की एक ऐसी लड़ी तैयार हुयी, जिसने इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में भारतीय राजसत्ता में अपनी गहरी पैठ बना ली।

दीनदयालजी ने स्वयं स्वीकार की। भारतीय जनसंघ की पहली पीढ़ी के सभी कार्यकर्ता इस काम में लगे। 1959 का पूना अभ्यासवर्ग, 1964 का ग्वालियर अभ्यास वर्ग तथा 1964 के संघ शिक्षा वर्गों का इस दृष्टि से विशेष महत्व है। इन वर्गों में परिपक्व हुये विचारों को दीनदयाल जी ने सिद्धांत और नीति प्रलेख में 'एकात्म मानववाद' नाम से प्रस्तुत किया।

खंडित दृष्टि : इस तरफ या उस तरफ वाले विचार : दीनदयाल जी ने कभी नहीं कहा कि पश्चिम की बहसों में कुछ सीखने के लिए नहीं है, उनसे भी सीखा जा सकता है। लेकिन वे साथ ही साथ मानते थे कि हमें पश्चिम के द्वंदमूलक निष्कर्षों का अनुयायी नहीं बनना है। प्रकृति बनाम मानव, भौतिकवाद बनाम अध्यात्म, स्टेट बनाम चर्च, रिलिजन बनाम सांइस जैसे इस तरफ या उस तरफ वाले विचार को वे खंडित दृष्टि मानते थे। यह भारत में कांग्रेस राज का समय था। वे अपने कारखाने से वामपंथी इको सिस्टम वाले लेखक और विचारकों का उत्पादन कर रहे थे, जिससे देश में एक खास तरह का नैरेटिव स्थापित हो। वे इसमें दशकों तक सफल हुए। यह समय ऐसा था जब जनसंघ की आवाज अधिक लोगों तक नहीं पहुंच रही थी। कहने के हर एक माध्यम पर कांग्रेसियों और उनके वामपंथी इको सिस्टम का कब्जा था। ऐसी विपरीत परिस्थितियों के बीच मौलिक भारतीय चिन्तन के आधार पर विकल्प देने की जिम्मेदारी दीनदयालजी ने स्वयं स्वीकार की। भारतीय जनसंघ की पहली पीढ़ी के सभी कार्यकर्ता इस काम में लगे। 1959 का पूना अभ्यासवर्ग, 1964 का ग्वालियर अभ्यास वर्ग तथा 1964 के संघ शिक्षा वर्गों का इस दृष्टि से विशेष महत्व है। इन वर्गों में परिपक्व हुये विचारों को दीनदयाल जी ने सिद्धांत और नीति प्रलेख में 'एकात्म मानववाद' नाम से प्रस्तुत किया। 1965 में भारतीय जनसंघ के विजयवाड़ा वार्षिक अधिवेशन में इसे मूल दर्शन के रूप में स्वीकार किया गया तथा 1985 में भारतीय जनता पार्टी ने भी इसे अपने मूल दर्शन के रूप में स्वीकार किया। दीनदयालजी ने बताया कि राष्ट्रीय विचार, मानव बनाम प्रकृति नहीं बल्कि मानव के साथ प्रकृति की एकात्मता का विचार है। भौतिक बनाम अध्यात्मिक नहीं बल्कि इन दोनों की एकात्मता का विचार है। भारत में इसे धर्म कहा गया है 'यतो अभ्युदय निःश्रेयस संसिद्धि स धर्म।' अर्थात् यह व्यष्टि, समिष्ट, सृष्टि व परमेष्ठी की एकात्मता का विचार है।

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' को याद करते हुए लिखूं तो पश्चिमी चमक दमक को और चमकाने के लिए कांग्रेस ने पिछले सात दशकों में इतना मांजा है कि अब उस चमक दमक का मुलम्मा ही उतर चुका है। आज का युवा पश्चिम बनाम भारतीय के जाल में पड़कर फिर वामपंथी इको सिस्टम के जाल में फंसने को तैयार नहीं है। वह समेकित और एकात्मता के विचार को समझ चुका है। दीनदयालजी के ही विचार को प्रधानमंत्री मोदी अपने शब्दों में जब अभिव्यक्त करते हैं तो वह सबका साथ सबका विकास बन जाता है। ■

राजी सिंह
(लेखिका)

तथ्यों पर आधारित ज्ञानवापी का सच

ज्ञानवापी परिसर में वैज्ञानिक साक्ष्य जुटाने के सन्दर्भ में सर्वोच्च न्यायालय ने निर्णय सुनाते हुए एक महत्वपूर्ण प्रश्न किया कि 'आखिर सर्वेक्षण के द्वारा सच सामने लाने में क्या परेशानी है?' इस पर मुस्लिम पक्ष को नीर-क्षीर विवेक से आत्मचिन्तन करना चाहिए। मन्दिरों के भग्नावशेषों पर निर्मित मस्जिदों का इतिहास किसी से छिपा नहीं है। फिर तथ्यों और सत्य को झुठलाने का प्रयास ही क्यों किया जाए? क्यों न्यायाधीशों का अमूल्य समय नष्ट किया जाए? ऐसे पर्याप्त ऐतिहासिक विवरण उपलब्ध हैं जो ज्ञानवापी का अस्तित्व मन्दिर के रूप में प्रमाणित करते हैं। ये विवरण देश के ही नहीं विदेश के लोगों ने भी लिखे हैं। कुछ विवरण वे भी हैं जो औरंगजेब के नजदीकियों ने लिखें हैं और जिनमें कहा गया है कि इस मुगलशासक ने काशी विश्वनाथ मन्दिर को ध्वस्त करने के निर्देश दिए थे। लेकिन इन प्रमाणों को निरंतर अनदेखा किया जाता रहा है।

किसी राष्ट्र का इतिहास उसकी राजनीतिक विफलताओं या उस कालखंड के शासकों के महिमामंडन से तय नही होता। देश का इतिहास उसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से तय होता है। यह देश का दुर्भाग्य रहा कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी हमारा राजनैतिक नेतृत्व और बुद्धिजीवी वर्ग देश की सांस्कृतिक विरासत के प्रति उदासीन रहा। उसकी यह उदासीनता मुगलकालीन अनेक स्थापत्यों को लेकर हो रहे विवादों का कारण बनी। अखंड भारत में अनेक प्रसिद्ध प्राचीन मन्दिर रहे हैं। इन मन्दिरों का अपना एक समृद्ध और गौरवशाली इतिहास रहा है। इस इतिहास को हमें पढ़ाया नहीं गया। इससे हम सब अनभिज्ञ हैं। पिछले वर्ष ज्ञानवापी परिसर का सर्वेक्षण हुआ। इस सर्वेक्षण में परिसर में अनेक सनातन धर्म के प्रतीक मिले। साथ ही एक प्राचीन विशाल शिवलिंग भी मिला। हिन्दू समाज गदगद था कि आदि विश्वेश्वर स्वयं प्रकट हो गए। नन्दी की सदियों की प्रतीक्षा पूरी हुई। किन्तु मुस्लिम पक्ष इसे शिवलिंग मानने को तैयार नहीं था, वह इसे फव्वारा बता रहा था। इसने विवाद को गहरा दिया। सर्वेक्षण में विशाल शिवलिंग मिलने के उपरान्त सभी लोगों का ध्यान ज्ञानवापी की ऐतिहासिक प्राचीनता की ओर गया। उसमें इतिहास जानने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई। 'काशी विश्वनाथ का इतिहास कितना पुराना है?' विशाल नन्दी की स्थापना कब हुई? आदि विश्वेश्वर का इतिहास क्या है? मस्जिद का निर्माण कब हुआ? जैसे अनेक प्रश्न उसके मन में उठने लगें। जनमानस इन प्रश्नों का उत्तर जानने को आतुर हो उठा। उसके सामने मस्जिद निर्माण का इतिहास था, लेकिन मन्दिर के इतिहास पर समय की गर्द जमी थी। ये सब प्रश्न उठने स्वाभाविक हैं और इस लेख में हम इन्हीं प्रश्नों के उत्तर तलाशने का प्रयास कर रहें हैं-

काशी में विश्वनाथ जी ज्योतिर्लिंग है। भारत में बारह ज्योतिर्लिंग हैं। इनमें से आठ ज्योतिर्लिंग स्वयंभू हैं जो प्रकट हुए हैं इनमें से आदि विश्वेश्वर प्रथम स्वयंभू ज्योतिर्लिंग हैं। जो अनादि हैं। उनका प्राकट्य कब हुआ कोई नहीं बता सकता। यह इतिहास लेखन से बहुत पहले की घटना है। उसे मन्दिर का रूप देकर सनातन धर्मी सदियों से वहां भगवान विश्वनाथ की पूजाअर्चना करते रहे हैं। ज्ञात इतिहास के आदि में जाने पर आदि शंकराचार्य का उल्लेख मिलता है। शंकराचार्य का जन्म ईसा पूर्व 507 में केरल में हुआ था। बहुत कम आयु में ही वह गुरु से दीक्षा लेकर काशी आ गए थे। काशी में उन्होंने गंगा स्नान के बाद अपने कमण्डल में भरे गंगाजल से भगवान विश्वेश्वर का अभिषेक किया। उस समय उनकी आयु बारह वर्ष थी। काशी में रहते हुए आदि शंकराचार्य को भगवान विश्वनाथ ने चांडाल के रूप में दर्शन दिए और तत्वबोध कराया। इसका उल्लेख आदि शंकराचार्य से सम्बन्धित प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है। भगवान शिव को साक्षात् सामने देख भावविहवल होकर उनकी स्तुति में जो मन्त्र शंकराचार्य के मुख से निकले थे, आज भी वो 'मनीषा पंचक' नाम से लोकप्रिय हैं। यहां आदि शंकराचार्य का उल्लेख करने का उद्देश्य यह बताना है कि जब धरती पर इस्लाम की उत्पत्ति भी नहीं हुई थी, काशी विश्वनाथ का इतिहास उससे भी बहुत पहले का है।

विश्वेश्वर ज्योतिर्लिंग का उल्लेख बारहवीं शताब्दी के ग्रन्थों में मिलता है। स्कन्द पुराण के काशी खंड के तैंतीसवे अध्याय में एक कथा है उसके अनुसार भगवान शिव काशी में ज्योतिर्लिंग के रूप में प्रकट हुए और उसके जलाभिषेक के लिए उन्होंने ज्योतिर्लिंग के दक्षिण की भूमि में अपने त्रिशूल को गाडकर जलधारा निकाली जिसे ज्ञानवापी का नाम दिया। शिव ने सदैव काशी में रहने का आशीर्वाद भी दिया। इसीलिए काशी विश्वनाथ ऋचाओं से अभिमंत्रित अविमुक्त क्षेत्र कहा जाता है। काशी विश्वनाथ हिन्दुओं की आस्था का प्राचीनतम केन्द्र रहा है। जिसे मस्जिद कहते हैं उसकी पश्चिमी दीवार ज्ञानवापी के ठीक उत्तर दिशा में हैं और रजिया की मस्जिद भी उत्तर में ही है। जिससे प्रमाणित होता है कि जिस भूमि पर मस्जिद खड़ी है वही विश्वेश्वर मन्दिर की आदि भूमि रही है।

वाराणसी के मन्दिर सनातन विद्या और श्रद्धा के केन्द्र थे। इसीलिए मन्दिर और उनके अध्ययन केन्द्र विशेष रूप से इस्लामी आक्रांताओं के निशाने पर रहते थे। मन्दिरों पर आक्रमण 1194 में शुरू हुए, जब मोहम्मद गौरी के गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक ने आक्रमण किया। कन्नौज के राजा जयचन्द को हराने के बाद वाराणसी के सैकड़ों मन्दिर लूटे गए और ध्वस्त कर दिए गए। काशी के विश्वेश्वर मन्दिर को ध्वस्त कर उसके स्थान पर रजिया मस्जिद बना दी गई। इस आक्रमण का विवरण इतिहासकार हसन निजामी की पुस्तक 'ताज -उल-मआसिर' में है। वर्तमान में रजिया की मस्जिद ज्ञानवापी से पूर्वोत्तर में लगभग 200 मीटर दूर एक ऊँचे स्थान पर है। इसके पार्श्व में ही अविमुक्तेश्वर महादेव का मन्दिर है।

1447 में जौनपुर के महमूद शाह शर्की ने यहीं बने विश्वेश्वर मन्दिर का विध्वंस किया था। शर्की के आक्रमण के बाद भी खंडहर में ही पूजाअर्चना होती रही। यहां पर एक गुरुकुल (पाठशाला) भी संचालित होती थी जिसे 1494 में सिकन्दर लोधी ने आक्रमण कर ध्वस्त कर दिया था। 1669 में औरंगजेब द्वारा मन्दिर को ध्वस्त कर भग्नावशेषों पर मस्जिद बनवाई गयी। औरंगजेब काल के इतिहासकार साकी मुस्तइद्दखां की प्रसिद्ध पुस्तक 'म आसिर-ए-आलमगीरी' में औरंगजेब के वाराणसी के विश्वेश्वर मन्दिर को तोड़ने के आदेश पत्र की प्रतिलिपि है जो 8 अप्रैल 1669 को जारी किया गया था। इसके साथ ही उसके दरबार का 2 जून 1669 का वह रिकॉर्ड भी उपलब्ध है जिसमें औरंगजेब के आदेश को क्रियान्वित करने की जानकारी दी गयी है। मुस्तइद्दखां औरंगजेब के दरबारी नहीं थे इसलिए औरंगजेब के शासन काल के विषय में लिखी गयी उनकी बातों को प्रमाणिक माना जाता है। औरंगजेब के निर्देश पर ध्वस्त मन्दिर के अवशेषों पर मस्जिद निर्मित होने के बाद मराठा राजाओं ने उसकी निकटवर्ती भूमि पर पुनः मन्दिर बनवाने का प्रयास किया, किन्तु सफल नही हो सके। 1785 में अहिल्याबाई होल्कर ज्ञानवापी के नजदीक काशी विश्वनाथ का वर्तमान मन्दिर बनवाने और उसमें शिवलिंग स्थापित कराने में सफल हुई।

ज्ञानवापी परिसर की पिछली दीवार के स्थापत्य और उसके मध्य में बने द्वार को ध्यानपूर्वक देखने से ही स्पष्ट हो जाता है कि यह हिन्दू मन्दिर के ही सामने की दीवार और उसका प्रवेश द्वार है। अंग्रेज इतिहासकार और 'एशियाटिक सोसाइटी बंगाल शोधपत्र' के संस्थापक सम्पादक जेम्स प्रिंसेप के 1832 के लिथोग्राफ में पश्चिमी दीवार की कारीगरी को सूक्ष्मता और महीनता से दर्शाया गया है। प्रिंसेप ने अपनी पुस्तक में अष्टकोणीय आदि विश्वेश्वर मन्दिर का मानचित्र भी दर्शाया है। इसमें ८ मंडप थे। प्रत्येक मंडप का अपना नाम था। इनके मध्य में मन्दिर का गर्भगृह था जिसमें आदि विश्वेश्वर का शिवलिंग विराजमान था। प्रिंसेप ने लिखा है कि ज्ञानवापी के तहखाने में प्राचीन मन्दिर से निकली प्रतिमाओं और प्रतीकों के भग्नावशेष रखें हैं। वीडियो सर्वेक्षण से उसकी बातों की पुष्टि होनी शुरू हो गई है।

ईसाई पर्यटक और लेखक एडविन ग्रीब्स ने अपनी पुस्तक 'काशी द सिटी इलस्ट्रियस' में लिखा है कि पूरे बनारस में स्थापत्य का इस भग्नावशेष दीवार से उत्तम उदाहरण नहीं मिलता।

ज्ञानवापी की पश्चिमी दीवार का स्थापत्य नासिक के त्रयम्बकेश्वर मन्दिर की बाहरी दीवार जैसा है। इससे प्रमाणित होता है कि यह अकबर के समय बनाए गए विश्वेश्वर मन्दिर की दीवार थी जिसे राजा टोडरमल ने राजा मानसिंह की सहायता से मराठी मूल के पंडित नारायण भट्ट के निर्देशन में बनवाया था। इस मन्दिर का वर्णन अंग्रेज व्यापारी पीटर मंडी ने जो 1632 में काशी की यात्रा पर आए थे, अपनी पुस्तक 'द ट्रवैल्स ऑफ पीटर मंडी इन यूरोप एंड एशिया' में किया है। उसने एक रेखाचित्र के माध्यम से पंक्ति में खड़े भक्तगणों को विश्वेश्वर ज्योतिर्लिंग का जलाभिषेक करते दिखाया है। 1936 में वाराणसी की अदालत और 1937 में इलाहाबाद उच्च न्यायालय के निर्णयों में स्पष्ट रूप से स्वीकार किया गया है कि ज्ञानवापी को प्राचीन मन्दिर के स्थान पर बनाया गया है।

मन्दिर ध्वंस और मस्जिद निर्माण के बाद से ही उसके बाहर एक विशाल नन्दी स्थापित है। इसका मुंह मस्जिद परिसर में स्थित वजूखाने की ओर उसकी सीध में है। यह वही वजूखाना है जिसमें शिवलिंग मिला है। सनातन सत्य है कि जहां नन्दी है वहां शिवलिंग अवश्य होगा। नन्दी शिव की उपस्थिति का शाश्वत सत्य है। इसी नन्दी का चित्र हमारे संविधान के पृष्ठ एक पर अंकित है। हिन्दू समाज का कहना है कि नन्दी के सामने ही शिवलिंग रहा होगा। शिवलिंग वाले उस स्थान को तालाबनुमा बनाकर बजूखाना बना दिया गया था।

ज्ञानवापी संस्कृत का शब्द है। विश्व इतिहास में किसी भी मस्जिद का नामकरण संस्कृत शब्द के साथ नहीं मिलता फिर नन्दी और काशी विश्वनाथ को लेकर कैसा विवाद? ज्ञानवापी का सच सामने लाने का प्रयास गड़े मुर्दे उखाडना नहीं है, बल्कि इतिहास की भूल को देर से ही सही सुधारने की एक पहल है। ऐसे स्थान जहां स्पष्ट तौर पर दिखता है कि मन्दिर तोड़कर मस्जिद बनाई गयी है, वे हिन्दू समाज की आत्मा को कचोटते हैं। उन्हें अपमानित महसूस कराते हैं। इसलिए उनका समाधान होना आवश्यक है। आवश्यक यह भी है कि सभी प्राचीन मन्दिरों के इतिहास को संरक्षित किया जाए और उसका पुनर्लेखन भी हो। ■

इतिहास का सच है गुलाम नबी का कथन

विजय मनोहर तिवारी
(लेखक)

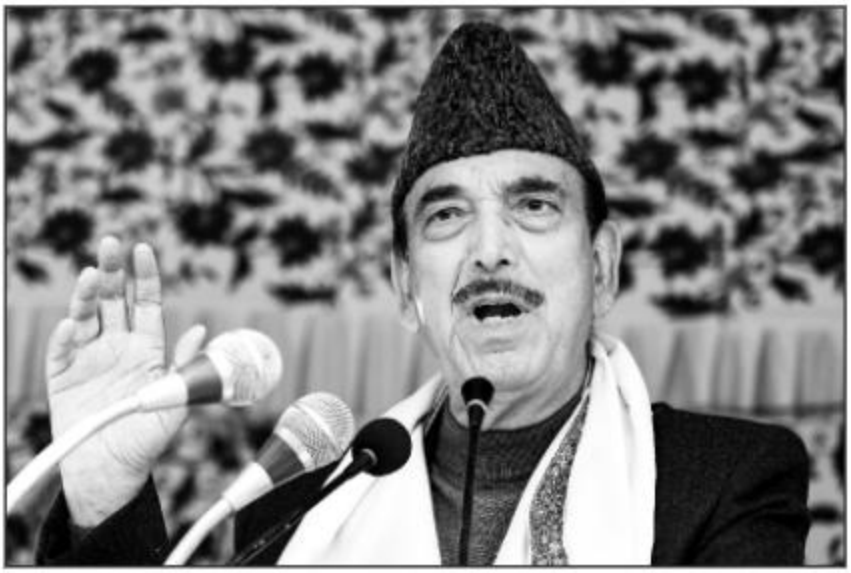

पश्चिम की दुनिया ने तो इस सदी में 9/11 का स्वाद चखा और इस्लामी आतंक की शक्ल ठीक से देखी। मगर भारत का चप्पा-चप्पा ऐसे अनगिनत 9/11 से भरा हुआ है। एक ही शहर में कई-कई 9/11 हैं। ये हजार साल में इतनी-इतनी बार हुए हैं कि इंसानी याददाश्त ही चकरा जाए।

जिस समय यह अंधड़ चल रहे थे उसी समय 50 से ज्यादा लेखकों के लिखे दस्तावेजों में इनकी भयावता दर्ज है और इन लेखकों में सारे ही मुस्लिम थे। मैंने ये दस्तावेज अनेक बार पढ़े-पलटे हैं और इन घटनाओं को रेखांकित किया है।

धर्मांतरण के ब्यौरे ऐसे अपमानजनक हैं कि आज कोई भी आत्मसम्मान वाला व्यक्ति अपने अतीत में झांकने भर से खुदकुशी कर ले। इसलिए कश्मीर में गुलाम नबी आजाद ने जो कहा है, उसे इतिहास की रोशनी में देखिए, किंतु राजनीति की आँख से नहीं।

अलाउद्दीन खिलजी (1296–1316) के समय दिल्ली में गुलामों के बाजार में बिकती लड़कियों और महिलाओं से जियाउद्दीन बरनी मिलवाया है। वे बाजार सदियों तक सजे रहे और लाखों गुलाम बेची गईं। वे खरीदी गईं। उपहारों में दी गईं। उनके साथ क्या हुआ होगा, किरदार में उतरकर सोचिए। स्पष्ट है कि उनके बच्चे हुए होंगे, बच्चों के बच्चों के बच्चे हुए होंगे। 2023 के भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश में आज उनकी संतानों की पहचान किनमें की जाए?

धर्मांतरण के ब्यौरे ऐसे अपमानजनक हैं कि आज कोई भी आत्मसम्मान वाला व्यक्ति अपने अतीत में झांकने भर से खुदकुशी कर ले। इसलिए कश्मीर में गुलाम नबी आजाद ने जो कहा है, उसे इतिहास की रोशनी में देखिए, किंतु राजनीति की आँख से नहीं।

इब्नबतूता ने मोहम्मद तुगलक के समय के ईद के जलसों की लाइव रिपोर्टिंग की है, जहां लड़कियाँ तोहफों में बांटी जा रही हैं। जिन्हें ये लड़कियाँ बांटी गईं, उन हितग्राहियों में हर बार कई आलिम और सूफी भी इब्नबतूता ने चिन्हित किए हैं। वह लिखता है कि ये लड़कियाँ हमलों में हारे हिंदू राजघरानों से लूटकर लाई गईं राजकन्याएँ थीं। वे कहाँ गईं? उनकी संतानें आज अखंड भारत का हिस्सा रहे अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश में कहाँ किन शक्लों में पहचानी जाएँ? धर्मांतरण केवल ऐसा नहीं था कि कोई तलवार सहित आया और आपने खुश होकर कहा-'कुबूल है जी!'

आइए इन दस्तावेजों को पाँच मिनट में केवल पलटकर झाँकें कि कहां-क्या हो रहा है-

सिंध पर 712 में अरबों के कब्जे के बाद देवल, अलोर, सेहवान, नरूनकोट और ब्राह्मणाबाद सबसे शुरुआती 9/11 हैं ... देवल के मंदिर से 700 देवदासियों समेत हजारों लोगों को कैद किया गया... नरूनकोट की हिफाजत एक बौद्ध को सौंपी गई थी जो बिना लड़े ही सरेंडर हो गया... रावड नाम के शहर में अरबों के दाखिल होने के पहले दाहिर की रानी और राज्य की प्रमुख महिलाओं ने सामूहिक चिता में आत्मदाह किया... यहां 30 हजार लोगों को गुलाम बनाया गया, जिनमें दाहिर की दो बेटियों सहित सिंध के सम्मानित राजप्रमुखों की 30 बेटियां भी शामिल थीं...

महमूद गजनवी के हमलों में सोमनाथ गुजरात का पहला 9/11 है... सोमनाथ पर लगातार मुगलों तक ऐसे 6 बार 9/11 हैं...

इल्तुतमिश के हाथों 1232 में ग्वालियर पर हमला, पड़ाव पर हिंदुओं का हत्याकांड... उज्जैन के महाकाल मंदिर और विदिशा के विजय मंदिर की तबाही 1234 में इसी इल्तुतमिश के हाथों पहली बार हुई, जिसके समय दिल्ली में महरौली के मंदिरों को मलबा बनाकर उसी मलबे से कुव्वत-उल-इस्लाम

मस्जिद बनाई गई...

1266 में बलबन ने दिल्ली से सटे मेवात और उत्तरप्रदेश के कटेहर इलाके में हिंदुओं की 'लाशों के खलिहान' लगवा दिए और सख्त निगरानी के लिए ये इलाके बेरहम अफगानियों के हवाले कर दिए... यह रामपुर, बरेली, संभल, मुरादाबाद, बंदायू और अमरोहा का इलाका है...

जलालुद्दीन खिलजी ने 1290 में रणथंभौर के मंदिर नींव तक खुदवा दी... अलाउद्दीन खिलजी ने 1295 में देवगिरि पर हमला किया और 600 मन सोना लूटकर लाया... 1299 में गुजरात पर हमला और एक बार फिर सोमनाथ तबाह... 1301 में एक बार फिर रणथंभौर पर हमला, मंदिरों का विनाश और जौहर... इसी साल मध्यप्रदेश के उज्जैन और मांडू में आखिरी परमार राजा महलकदेव पर हमला, हत्याएँ और लूट... 1303 में चित्तौड़गढ़ पर हमला, 30 हजार हिंदुओं का कत्लेआम और जौहर... 1307 में देवगिरि को फिर से लूटा गया और 1310 में तेलंगाना और कर्नाटक के मंदिर लूटकर तबाह किए... 1308 में सिवाना और जालौर पर हमले में राजा शीतलदेव और हजारों हिंदुओं का कत्ल...

1320 में गयासुद्दीन तुगलक के दिल्ली पर कब्जा करते ही गुजरात मूल के परवार जाति के लोगों का एक ही दिन में कत्लेआम का आदेश... मुहम्मद तुगलक के महल के सामने तो दिन भर मौत की सजा पाने वालों के सिर कलम करने के लिए जल्लाद नियुक्त कर दिए गए... 1327 में इस तुगलक के हाथों में कर्नाटक में कम्पिला नाम का पूरा राज्य तबाह, दो महीने तक खूनखराबा किया गया और दक्षिण में राज परिवार की स्त्रियों के पहले जौहर का धुआं आसमान में देखा गया...

फिरोजशाह तुगलक ने 1353 में बंगाल के 9/11 में एक लाख 80 हजार लोगों के कत्ल किए, कटे हुए सिर पर नकद इनाम की स्कीम और इसी तुगलक के हाथों 1365 में जगन्नाथ और ज्वालामुखी के मंदिर मिटाए गए... फिरोजशाह की मां नाएला भट्टी एक हिंदू राजा की बेटी थी...

1528 में आगरे पर बाबर के कब्जे के बाद उसने चंदेरी पर हमला बोला...राजा मेदिनीराय के 5 हजार राजपूत सीधी टक्कर में मारे गए, जिनके कटे हुए सिरों की मीनार बनवाई गई... रानी मणिमाला का जौहर स्मारक आज भी है...

1543 में शेर शाह सूरी ने मध्यप्रदेश के रायसेन पर हमला किया और एक ही दिन में राजा पूरनमल के पूरे परिवार को थोखे से मरवा दिया...

1565 में अकबर ने जबलपुर के पास रानी दुर्गावती पर हमले के लिए आसफ खां को भेजा, रानी ने सीधी लड़ाई में जीवित पकड़े जाने की बजाए मैदान में खुदकुशी की, उसका बेटा मारा गया, महल में स्त्रियों ने जौहर किया, पूरे वंश का विनाश... अकबर के चित्तौड़ के हमले में एक बार 30 हजार बेकसूर नागरिक कत्ल किए गए और जौहर हुआ...

गुलाम नबी आजाद के भीतर अपने अपमानित पुरखों का कोई अंश ही होगा, जो वे साहसपूर्वक एक सच सबके सामने कह गए! सच को स्वीकार करना चाहिए, किंतु तथ्यों की रोशनी में और तथ्य अब किसी से छिपे हुए नहीं हैं!

ठीक इसी समय दूर दक्षिण में 1565 में तालिकोट की लड़ाई में पाँच मुस्लिम बहमनी सुलतानों ने एकजुट होकर भारत के आखिरी हिंदू साम्राज्य विजयनगर को जलाकर राख कर दिया... कर्नाटक के बेल्लारी जिले में वह शहर आज भी खंडहरों में खोया हुआ है...

कश्मीर में सिकंदर बुतशिकन, आगरा में सिकंदर लोदी और गुजरात में महमूद बेगड़ा ने मुगलों के आने के पहले हजारों मंदिरों को मिटाया और हिंदुओं के कत्लेआम जारी रखे२बीदर के महमूद गवां ने कर्नाटक में विजयनगर के पास एक ही हमले में 20 हजार लोगों को कत्ल कराया और इतने ही बंदी बनाकर गुलामों की तरह 5–10 तनकों में बेच दिया...

मध्यप्रदेश के मांडू में गुजरात के एक हमलावर के हमले में एक ही दिन में 18 हजार हिंदू राजपूत कत्ल किए गए...

सबसे बदनाम मुगल औरंगजेब के फरमान से काशी और मथुरा के मंदिरों के विनाश इतिहास में दर्ज हैं...

1398 में तैमूरलंग के दिल्ली हमले में एक लाख हिंदुओं का कत्लेआम हुआ...नादिरशाह और अहमदशाह अब्दाली के हमलों में भी लूटमार के पहले कत्लेआम किए गए...

जिन्हें लक्ष्य करके इस्लाम कुबूल करने पर मजबूर किया गया और अगर इस्लाम कुबूल नहीं किया तो उसकी सजाएं आज के सीरिया में हुए सार्वजनिक कत्लेआमों जैसी ही थीं। दिल्ली के चाँदनी चौक पर गुरू तेग बहादुर, भाई जतीदास और भाई मतीदास आइसक्रीम खाने नहीं आए थे! छत्रपति शिवाजी के बेटे छत्रपति संभाजी की मृत्यु हृदयाघात से किसी एम्स में नहीं हुई थी। सरहिंद के किले पर गुरू गोविंद सिंह के वीर बालकों को चिप्स खिलाने के लिए आमंत्रित नहीं किया गया था। चौराहों पर सार्वजनिक उनके सिर कलम किए गए, उन्हें जीवित जलाया गया, आरों से काटा गया, दीवारों में चुनवाया गया, टुकड़े-टुकड़े किए गए और शहर के हर दरवाजों पर टाँगे गए।

इतिहासकार हरबंश मुखिया ने एक व्याख्यान में कहा था कि इस्लामी धर्मांतरण भी जिंदा रहने की सजा का एक विकल्प ही था। अगर आप जजिया नहीं दे सकते हैं और इज्जत से मुस्लिम हुकूमत में रहना भी चाहते हैं तो इस्लाम कुबूल कर लें। यह एक ऐसी सजा थी, जो पीढ़ियों से भोगी जा रही है।

आप सच से भाग नहीं सकते। सच को दबा नहीं सकते। सच ज्ञानवापी की दीवारों से झांक-झांककर अपना पता देगा और तहखानों में चीख-चीखकर पुकारेगा। गुलाम नबी आजाद के भीतर अपने अपमानित पुरखों का कोई अंश ही होगा, जो वे साहसपूर्वक एक सच सबके सामने कह गए! सच को स्वीकार करना चाहिए, किंतु तथ्यों की रोशनी में और तथ्य अब किसी से छिपे हुए नहीं हैं!

वैसे एक प्यारे जंतु के रूप में हम शुतुरमुर्गों का भी सम्मान करते हैं!! ■

आत्मनिर्भरता से अन्त्योदय

पहली महिला फूड डिलीवरी गर्ल

यह कहानी है उत्तराखण्ड के रुद्रपुर की रहने वाली मनीषा की, जिन्होंने बच्चों को उत्तम शिक्षा दिलाने के लिए स्वयं काम करने का निर्णय किया। बहुत खोजबीन के बाद भी जब उन्हें कोई काम नहीं मिला तो उन्होनें ऑनलाइन फूड डिलीवरी ऐप स्विगी से जुड़कर फूड डिलीवरी का काम शुरु कर दिया। अब मनीषा ऊधम सिंह नगर जिले की पहली फूड डिलीवरी गर्ल बन गई। मनीषा प्रतिदिन सुबह से लेकर देर रात तक रेस्टोरेंट्स और ढाबों से खाना लेकर फूड डिलीवरी करती हैं जिस फूड डिलीवरी के काम में कभी लड़कों का दबदबा होता था आज वहां मनीषा ने सफलता के झंडे गाड़ दिए। मनीषा कहती हैं कि कठिन कुछ भी नहीं होता, आगे बढ़ने के लिए संघर्ष आपको स्वयं ही करना पड़ेगा और जब संघर्ष करेंगे तो परिणाम भी अच्छे आएंगे। मनीषा ने सिद्ध कर दिया कि चुनौतियां कितनी ही बड़ी क्यों न हों, अगर सही समय पर सही निर्णय लेकर उसपर अमल किया जाय तो जीवन में स्वावलम्बी होना कोई बड़ी बात नहीं है।

बिच्छु घास

ग्रामीण उद्यम वेग वृद्धि परियोजना के अंतर्गत उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा में महिलाओं को बिच्छू घास से रेशे निकालने और उनसे कपड़े बनाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा हैं और इन्हें रोजगार से भी जोड़ा जा रहा हैं। यहां से प्रशिक्षित मीनाक्षी रावत बताती हैं कि उन्हें जब भी समय मिलता है, वह बिच्छू घास से धागा निकालकर उससे कपड़े तैयार करती है। जिनसे उन्हें हर महीने आठ से दस हजार रुपये की आय हो जाती है। प्रशिक्षण प्राप्त कर बिच्छु घास से कपड़े बनाने वाली अन्य प्रशिक्षु प्रीति बिष्ट बताती हैं कि बिच्छु घास किसी वरदान से कम नहीं है। आज हर माह इस जंगली घास से ही हम लोगों की दस से बारह हजार रुपये की कमाई हो जाती है। जिससे परिवार का काम चल जाता है। इस प्रकार के प्रशिक्षण से जहां स्थानीय स्तर पर रोजगार और समृद्धि के नये क्षेत्र विकसित हो रहे हैं। वहीं ग्रामीण अर्थव्यवस्था को अब मजबूती मिल रही है जो समर्थ भारत अभियान को गति देने वाला है।

गाजियाबाद में मिलते हैं आकर्षक झुमके

झुमके एवं अन्य आभूषणों के प्रति महिलाओं की खूब रूचि होती है और जब समय त्योहारों का हो तो बाजारों में इसकी डिमांड और भी बढ़ जाती है। इसी व्यवसाय से जुड़कर भी गरीब लडकियां स्वावलंबी बन सकती हैं। गाजियाबाद के इंदिरापुरम में कनावनी गांव स्थित अस्मि शिक्षा केंद्र में गरीब लड़कियां हैंड मेड आर्टिफिशियल आभूषण और झुमके बनाती हैं जिससे इन लड़कियों को रोजगार मिलता है। केंद्र में झुमके, नैकलेस, मोबाइल कवर जैसी कई उपयोगी वस्तुएं बनाई जाती हैं। अस्मि कौशल विकास केंद्र की संस्थापक डॉ.भारती गर्ग ने बताया कि लड़कियों के बनाएं झुमके, ज्वेलरी लोगों को खूब पसंद आते हैं। हमारे यहां 50 रुपये में झुमके और सौ रुपए में नैकलेस मिल जाता है। यह केन्द्र 2018 से चल रहा हैं, वर्तमान में यहां 12 लड़कियां हैंड मेड ज्वेलरी बनाना सीख रही हैं। यह चार से छह महीने का कोर्स होता है। स्पष्ट है कि लड़कियां जहां प्रशिक्षण प्राप्त कर कौशलयुक्त बन रही हैं वहीं आत्मनिर्भर भारत के सपने को भी साकार कर रही हैं। ऐसे छोटे-छोटे प्रयास स्वावलम्बन के साथ साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी सशक्त कर रहे हैं।

केदारनाथ में महिला टेंट संचालिका

केदारनाथ यात्रा में इस बार घाटी की महिलाओं ने स्वरोजगार का नया उदाहरण प्रस्तुत किया है। केदारघाटी के अलग-अलग गांवों की 20 से अधिक महिलाएं पहली बार पैदल यात्रा मार्ग से लेकर धाम तक आश्रय टेंट का संचालन कर रही हैं। महिलाओं द्वारा ये टेंट गौरीकुंड-केदारनाथ यात्रा मार्ग पर लगाए गए। इससे तीर्थ यात्रियों को कंपकंपाती ठंड में रात को ठहरने के लिए स्थान मिल रहा है। इनमें अधिकांश महिलाएं वृद्धों और बच्चों को निस्शुल्क चाय, गर्म पानी और दूध उपलब्ध करा रही हैं। सेवा और स्वरोजगार का यह अनुठा संगम मातृ शक्ति के पुरूषार्थ को चरितार्थ कर रहा हैं।

अंजीर और लिंगुड़ा से महिलाओं को रोजगार

उत्तराखंड के चमोली में प्राकृतिक रूप से पाए जाने वाले अंजीर और लिंगुड़ा स्वयं सहायता समूह से जुड़ी स्थानीय महिलाओं की आय को बढ़ाने में मददगार सिद्ध हो रहे हैं। अब आजीविका मिशन के अंतर्गत अंजीर का सही से उपयोग करते हुए इनसे अचार और जैम बनाया जा रहा है। साथ ही इसको हिमान्या नाम से ब्रांडिग कर स्थानीय बाजार, सरस सेंटर, हिलांस आउटलेट सहित अनेक विभागों के आउटलेट में बेचने के लिए रखे जाने की योजना है। पहले स्थानीय महिलाओं को इसके बारे में जानकारी नहीं थी लेकिन अब वे इसका सही प्रयोग करना सीख रही हैं इसके सही उपयोग से इन महिलाओं की आय में भी निरन्तर वृद्धि हो रही है।

आंवले का स्टार्टअप

यूपी के प्रतापगढ़ अभिषेक सिंह आंवले के लड्डू, बर्फी और रसगुल्ले बना रहें हैं एवं इन खट्टे फलों को मीठे उत्पाद में बदल रहे हैं। आज विश्वभर में इनके उत्पादों की मांग है। 5 बीघे आंवले की खेती से शुरू हुआ ये स्टार्टअप आज सालाना 50 करोड़ टर्नओवर का बिजनेस बन चुका है जो 20 करोड़ रुपए का लाभ दे रहा है। इसमें 100 लोगों को रोजगार भी मिला हुआ है। अभिषेक ने MBA की पढ़ाई की है। उनके पास एक अच्छी नौकरी भी थी लेकिन उन्होंने अपने ही गांव में कुछ करने की ठानी। अभिषेक बताते हैं कि मैं अकसर दिल्ली के उन बाजारों में जाता था जहां आंवले के प्रोडक्ट बिकते थे। हमारे यहां बहुत छोटी मात्रा में आंवले की खेती की जाती थी। वहीं से मैंने आंवले के स्टार्टअप को शुरु करने का निर्णय किया। आज हम 33 बीघे में आंवले की खेती करते हैं और उसी से कई बाइप्रोडक्ट बनाते हैं। अभिषेक ने अपने परिश्रम और निष्ठा से सफलता प्राप्त की है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में योगदान देने के साथ ही आज कई युवाओं को स्वावलम्बी भी बना रहे हैं।

भांग के रेशे से बनाते हैं कपड़े

उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा में रहने वाले नरेंद्र चौहान भांग के रेशों से 50 प्रकार के कपड़े तैयार कर रहे हैं। मूल रूप से यूपी के वाराणसी के रहने वाले नरेंद्र अब अल्मोड़ा में स्वयं के साथ-साथ स्थानीय लोगों को भी कपड़े तैयार करने का प्रशिक्षण दे रहे हैं। नरेंद्र कई गांवों में महिलाओं का समूह बनाकर उन्हें प्रशिक्षण देने के साथ ही रोजगार भी उपलब्ध करवाते हैं। नरेन्द्र ने 2014 में हवालबाग के क्वैराली में गांवों से भांग के डंडे इकत्र कर कपड़े बनाने का काम शुरु किया था। आज उनके द्वारा बनाए गए भांग के रेशों से बने कपड़ों की मांग न केवल भारत बल्कि विदेशों में भी लगातार बढ़ रही है। अमेरिका और स्विटजरलैंड जैसे देशों में इन कपड़ों की भारी मांग है। नरेंद्र चौहान द्वारा संचालित भांग के रेशे से बने कपड़ों का वार्षिक व्यापार डेढ़ करोड़ से अधिक का है।

लड्डू गोपाल पालना

मेरठ के गांव दत्तावली में उन्नति महिला समूह की महिलाएं डोरी से कई आकर्षक सामान बनाकर समर्थ भारत के सपने को साकार कर रही हैं। श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप लड्डू गोपाल के प्रति आस्था के कारण इन दिनों महिलाओं द्वारा बनाया गया लड्डू गोपाल का पालना लोगों को बहुत आकर्षित कर रहा है। रंग बिरंगी डोरी से बने लड्डू गोपाल के पालने की डिमांड बढ़ने से महिलाओं की आय में बढ़ोत्तरी हो रही है और वे आर्थिक रुप से सशक्त भी हो रही हैं। इससे स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के नए-नए अवसर भी सृजित हुए हैं। सही अर्थों में यह लोकल उत्पाद और रोजगार ग्रामोदय के स्वप्न को साकार करते हुए समर्थ और सशक्त भारत के निर्माण को गति दे रहे हैं। ■

पत्रकारिता जगत में हलचल

अरुण नौटियाल- 'जी मीडिया' ने वरिष्ठ पत्रकार अरुण नौटियाल को आउटपुट हेड (जी न्यूज) के पद पर नियुक्त किया है। अपनी इस भूमिका में वह चैनल के न्यूज ऑपरेशंस और एडिटोरियल स्ट्रैटेजी को लीड करेंगे। वह 'जी न्यूज' के एडिटर को रिपोर्ट करेंगे। नौटियाल इससे पहले करीब 21 साल से 'एबीपी नेटवर्क' के साथ जुड़े हुए थे। यहां से उन्होंने कुछ समय पहले बतौर आउटपुट हेड अपने पद से इस्तीफा दे दिया था। नौटियाल को मीडिया के क्षेत्र में काम करने का करीब तीस साल का अनुभव है। पूर्व में वह 'आजतक' में भी अपनी जिम्मेदारी निभा चुके हैं।

अनुराधा श्रीनिवासन- 'एनडीटीवी' समूह से एचआर हेड के तौर पर अपनी जिम्मेदारी निभा रहीं अनुराधा श्रीनिवासन ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। श्रीनिवासन 'एनडीटीवी' समूह में लंबे समय से कार्यरत थीं। उन्होंने यहां पर बतौर फ्रंट ऑफिस एग्जिक्यूटिव जॉइन किया था और बाद में उन्हें चीफ प्रॉडक्शन कंट्रोलर की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। बाद में जयति रॉय द्वारा एचआर प्रमुख पद का कार्यभार छोड़ने का फैसला लेने के बाद श्रीनिवासन यह जिम्मेदारी संभाल रही थीं।

प्रणव सिरोही- दैनिक जागरण में कार्यरत पत्रकार प्रणव सिरोही को संस्थान ने सीनियर डिप्टी न्यूज एडिटर (सीनियर डीएनई) के पद पर प्रमोट किया है। वह पिछले साढे 6 वर्षों से संस्थान के साथ जुड़े हुए हैं। जागरण में वह एडिट और ओपेड डेस्क का हिस्सा हैं। पत्रकारिता में डेढ़ दशक से अधिक का अनुभव रखने वाले प्रणव सिरोही भारत के पहले हिंदी आर्थिक समाचार पत्र 'बिजनेस स्टैंडर्ड' की लॉन्चिंग टीम का हिस्सा भी रहे हैं, जहां उन्होंने 9 वर्ष काम किया। उन्होंने भारत के पूर्व वित्त मंत्री अरुण जेटली की किताब 'अंधेरे से उजाले की ओर' का अनुवाद भी किया है, जो 2016 में प्रभात प्रकाशन से प्रकाशित हुई।

अर्चना वोहरा- लोकप्रिय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म फेसबुक, इंस्टाग्राम और वॉट्सएप की पैरेंट कंपनी मेटा इंडिया की स्मॉल एंड मीडियम बिजनेस विभाग की प्रमुख अर्चना वोहरा ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। वह जनवरी 2019 से मेटा इंडिया में ग्लोबल बिजनेस ग्रुप, मिड मार्केट और स्मॉल बिजनेस की डायरेक्टर थीं। उन्होंने संकेत दिए कि वह जल्द ही किसी अन्य कंपनी में शामिल हो सकती हैं। वोहरा को इंडस्ट्री में काम करने का करीब 25 साल का अनुभव है। पूर्व में वह 'एमेजॉन' और 'टाइम्स इंटरनेट' जैसी प्रतिष्ठित कंपनियों में अपनी जिम्मेदारी निभा चुकी हैं।

गौरव शाह- अडानी' समूह द्वारा टेकओवर किए जाने के बाद 'एनडीटीवी' समूह में बदलावों का सिलसिला लगातार जारी है। ताजा बदलाव के तहत गौरव शाह, जिन्हें हाल ही में अडानी एंटरप्राइजेज लिमिटेड में जनरल मैनेजर और सीनियर बिजनेस पार्टनर की जिम्मेदारी सौंपी गई थी, अब 'एनडीटीवी' समूह में एचआर हेड होंगे। गौरव शाह करीब एक दशक से अडानी एंटरप्राइजेज लिमिटेड से जुड़े हुए हैं। उन्होंने वर्ष 2014 में अडानी एंटरप्राइजेज में बतौर मैनेजर जॉइन किया था। यहां करीब साढ़े तीन साल तक इस पद पर जिम्मेदारी निभाने के बाद उन्हें वर्ष 2018 में सीनियर मैनेजर (एचआर) के पद पर प्रमोट कर दिया गया था।

प्राची राजपूत- युवा पत्रकार प्राची राजपूत ने 'इंडिया टुडे' को अलविदा कह दिया है। प्राची करीब आठ महीने से यहां एंकर और वीडियो प्रॉड्यूसर के तौर पर अपनी जिम्मेदारी निभा रही थीं। उन्होंने अब 'रिपब्लिक भारत' के साथ नई पारी की शुरुआत की है। यहां उन्होंने बतौर चीफ वीडियो प्रॉड्यूसर जॉइन किया है। बता दें कि प्राची को मीडिया में काम करने का करीब पांच साल का अनुभव है। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत 'अमर उजाला' के साथ बतौर इंटर्न की थी। इसके बाद वह 'ईटीवी भारत' में एंकर और कंटेट राइटर के तौर पर कार्यरत रहीं।

मोनिका मीनल- पत्रकार मोनिका मीनल ने 'एचटी मीडिया' समूह से पत्रकारिता में अपनी नई पारी की शुरुआत की है। उन्होंने इस समूह के हिंदी अखबार 'हिन्दुस्तान' में सेंट्रल डेस्क (नोएडा) पर जॉइन किया है। मीनल इससे पहले जागरण समूह की डिजिटल कंपनी 'जागरण न्यू मीडिया' में अपनी जिम्मेदारी निभा रही थीं। इसके बाद कुछ समय के लिए वह इस समूह के हिंदी अखबार 'दैनिक जागरण' में भी कार्यरत रहीं। मोनिका मीनल को मीडिया के क्षेत्र में काम करने का करीब 18 साल का अनुभव है। उन्होंने 'प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया' से इंटर्नशिप करने के बाद मीडिया में अपने करियर की शुरुआत जागरण समूह के साथ ही की थी।

संकलन : मोहित कुमार (प्रोड्यूसर, न्यूज 24)

■

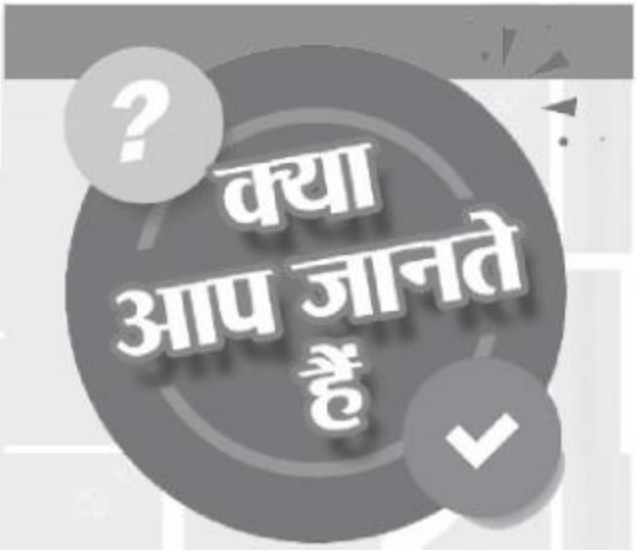

1. देश के शहीद वीर जवानों के सम्मान में कौन-सा राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू किया गया है?

(a) 'देश के वीर जवान' (b) 'मेरी माटी मेरा देश'
(c) 'भारत के वीर सपूत' (d) 'मेरा भारत महान'

2. अंत्योदय दिवस की घोषणा कब की गई ?

(a) 25 अगस्त 2023 में (b) 25 सितंबर 2014 में
(c) 25 अगस्त 2019 में (d) 25 सितम्बर 1991 में

3. 'अमृत भारत स्टेशन' योजना के अंतर्गत देश भर में कितने रेलवे स्टेशनों का आधुनिकीकरण किया जायेगा?

(a) 308 (b) 408
(c) 508 (d) 608

4. कौन सी भारतीय सबसे कम उम्र में तीरंदाजी में विश्व चैंपियन बनी है?

(a) नेहा बिष्ट (b) श्रेया सिन्हा
(c) दीपिका कुमारी (d) अदिति स्वामी

5. हजार वर्षों से भी प्राचीन वरुण देव मंदिर किस देश में स्थित है?

(a) पाकिस्तान (b) मलेशिया
(c) कंबोडिया (d) अमेरिका

6. हिन्दू मान्यताओं के अनुसार कितने उपनिषद् हैं ?

(a) 131 (b) 110
(c) 108 (d) 151

7. भारत माता मंदिर इनमें से किस शहर में है?

(a) शिमला (b) हरिद्वार
(c) ऋषिकेश (d) देहरादून

8. अरुल्मिगु श्री राजकालीयम्मन कांच का मंदिर किस देश में स्थित है

(a) दुबई (b) अमेरिका
(c) मलेशिया (d) ऑस्ट्रेलिया

9. भारत में शिक्षक दिवस मनाने की शुरुआत कब से हुई?

(a) 1962 (b) 1972
(c) 1965 (d) 1975

10. भगवान कृष्ण के गुरु कौन थे?

(a) द्रोणाचार्य (b) संदीपन मुनि
(c) महर्षि वशिष्ठ (d) गर्ग मुनि

उत्तर

1. (b), 2.(b), 3.(c), 4.(d), 5.(a), 6.(c), 7.(b), 8. (c) , 9. (a), 10. (b)

- ब्रिटेन के भारतीय मूल के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक ने कैंब्रिज विश्वविद्यालय में चल रही रामकथा में भाग लिया। सुनक ने कहा, "मैं यहां पर एक प्रधानमंत्री के तौर पर नही, बल्कि हिंदू के तौर पर आया हूं"
- भारत ने भारतीय सेना में कार्यरत नेपाल के बलिदानी गोरखा सैनिकों के परिवार को आवंटित किए 5.33 करोड़ रुपये, ये सम्मान राशि उन सैनिकों के परिवारजन को दी गई है जो सेना के विभिन्न ऑपरेशन में कर्तव्य निर्वाह करते हुए बलिदान हो गए।
- 'इकोनॉमिस्ट' में छपी रिपोर्ट के अनुसार सीरिया में योग ला रहा बड़ा बदलाव। सीरिया में योग प्रशिक्षक भगवा पहनकर योग प्रशिक्षण दे रहे हैं।

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

- द्वितीय विश्व युद्ध में भारतीय बलिदानियों की याद में इटली ने बनाया स्मारक, 5,782 सैनिकों ने दिया था सर्वोच्च बलिदान,भारतीय सैनिक नाइक यशवंत घाडगे की याद में मेमोरियल का नाम रखा गया है
- बलिया के लाल निखिल प्रताप ने किलिमंजारो पर फहराया तिरंगा : अफ्रीका की सबसे ऊंची पर्वत चोटी, 77वें स्वतंत्रता दिवस पर पाई सफलता
- दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामफोसा के निमंत्रण पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 22 से 24 अगस्त तक जोहानिसबर्ग में आयोजित 5वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में हुए सम्मिलित।

विशेष समाचार

- **21 जुलाई** : ज्ञानवापी मां श्रृंगार गौरी मामले में पूरे ज्ञानवापी परिसर की पुरातात्विक व वैज्ञानिक जांच करने की मांग संबंधित मामले में वाराणसी कोर्ट ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) को सर्वे की मंजूरी दी है। मुस्लिम पक्ष ने सर्वे का विरोध किया था।
- **22 जुलाई** : दिल्ली में 2 मस्जिदों को 15 दिन में अतिक्रमण खाली करने का रेलवे ने दिया नोटिस, रेलवे के मुख्य प्रवक्ता दीपक कुमार ने कहा कि अगर 15 दिन के अंदर इन्हें खाली नहीं किया गया तो रेलवे इस अतिक्रमण को स्वयं हटाएगा।
- **23 जुलाई** : उत्तराखंड पुलिस लव जिहाद और साइबर क्राइम पर सख्त, 'पुलिस गुरु जी' अभियान की शुरुआत कर बच्चियों को किया जा रहा जागरूक।
- **24 जुलाई** : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक मदन दास देवी जी पंचतत्व में विलीन, सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत, सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले, भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा, गृहमंत्री अमित शाह, मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे, देवेंद्र फडणवीस, अजित पवार ने दी श्रद्धांजलि।
- **25 जुलाई** : बरेली में कांवडियों पर हमले में सपा नेता उस्मान अल्वी गिरफ्तार, मस्जिद में पहले से जुटा रखे थे उप द्रवी।
- कर्नाटक के उडुपी में प्राइवेट कॉलेज की अलीमातुल शैफा, शबानाज और आलिया ने बाथरूम में दूसरे समुदाय की लड़की का प्राइवेट वीडियो बनाया और वाट्सऐप के माध्यम से दोस्तों को भेजा, तीनों लड़कियां सस्पेंड।
- **26 जुलाई** : सीएम योगी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एनडीआरएफ और एसडीआरएफ के बीच परस्पर समन्वय के साथ प्रदेश में तीन माह के भीतर सभी 75 जिलों में लगाएं अर्ली वार्निंग सिस्टम लगाने के निर्देश दिए।
- **26 जुलाई** : पीएम किसान सम्मान निधि की 14वीं किस्त जारी, योजना के अंतर्गत उत्तराखंड के 760148 लाभार्थी किसान परिवारों को 168 करोड़ रुपये की धनराशि हस्तान्तरित की गई।
- **27 जुलाई** : उत्तराखण्ड के हरिद्वार में नहीं खुलेंगे स्लॉटर हाउस, हाई कोर्ट ने पूर्व के अपने आदेश को रखा बरकरार हरिद्वार में मांस की बिक्री पर प्रतिबंध है।
- **28 जुलाई** : कर्नाटक हाईकोर्ट का महिला के पक्ष में अहम फैसला, कोर्ट ने कहा 'कुरान कहता है पत्नी और बच्चों की देखभाल करना पति का कर्तव्य', हाईकोर्ट ने बीवी और बच्चों को गुजारा भत्ता देने के आदेश के खिलाफ दायर याचिका की खारिज।
- **29 जुलाई** : झारखंड के पलामू में मुहर्रम जुलूस के दौरान तिरंगे का अपमान, अशोक चक्र की जगह उर्दू में लिखे गए

शब्द और बनाई गई तलवार।

- **30 जुलाई :** ISRO ने भरी सफलता की एक और उड़ान, PSLV-C56 रॉकेट से सिंगापुर के 7 उपग्रहों को सफलतापूर्वक कक्षा में किया स्थापित।
- **31 जुलाई** : एमपी के देवास में 35 परिवार के 190 लोगों ने इस्लाम त्यागकर सनातन धर्म में की घर वापसी, कहा हमारे पूर्वज किसी परिस्थितिवश मुस्लिम हो गए थे।
- वाराणसी में हुआ श्री आदि विश्वेश्वर मंदिर ज्ञानवापी के मॉडल का हुआ अनावरण।
- **1 अगस्त :** NIA ने PFI की आतंकी गतिविधियों पर कड़ा प्रहार किया, पीएफआई के सबसे पुराने और बड़े हथियार और फिजिकल ट्रेनिंग कैंप में से एक को कुर्क कर लिया है। पीएफआई का यह केंद्र 10 हेक्टेयर में फैला हुआ है।
- **2 अगस्त :** वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच पूर्व सह सरकार्यवाह मदनदास देवी की अस्थियां गंगा में विसर्जित।
- **3 अगस्त :** श्रीराम मंदिर की अद्भुत पेंटिंग बनाकर वाराणसी के पुरंदरपुर की बेटी प्रिया सिंह ने रचा इतिहास, वर्ल्ड ग्रेटेस्ट रिकॉर्ड में अंकित हुआ नाम।
- **4 अगस्त :** उत्तराखंड में रक्षा बंधनपर महिलाएं रोडवेज की बसों में कर सकेंगी निशुल्क यात्रा, सीएम ने दिए निर्देश।
- **5 अगस्त :** दिल्ली भाजपा के उपाध्यक्ष बने कपिल मिश्रा, उन्होंने ट्वीट किया कि एक छोटे से कार्यकर्ता को इस प्रकार स्नेह पूर्ण अपनाना केवल भाजपा में ही संभव है।
- **6 अगस्तः** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत देशभर के 508 रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास की आधारशिला रखी।
- **7 अगस्त :** दिल्ली अध्यादेश बिल दोनों सदनों से पास, पक्ष में 131 तो विपक्ष में पड़े 102 वोट।
- उत्तराखंड - अग्निवीर सैनिकों का प्रशिक्षण पूरा, अग्निवीर सेना भर्ती योजना में 752 जवानों ने 31 माह की कठिन आर्मी ट्रेनिंग प्राप्त की।
- **8 अगस्त :** संसद ने जन्म और मृत्यु पंजीकरण को सरल और डिजिटल बनाने वाले विधेयक को मंजूरी दे दी।
- **9 अगस्त :** सरकार, खुदरा कीमतों पर अंकुश लगाने के लिए 50 लाख टन गेहूं और 25 लाख टन चावल खुले बाजार में बेचेगी।

- **10 अगस्त :** हॉकी में, भारत ने अंतिम ग्रुप स्टेज मैच में पाकिस्तान को 4–0 से हराकर एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी के सेमीफाइनल में प्रवेश किया।
- **11 अगस्त :** संसद के दोनों सदन अनिश्चितकाल के लिए स्थगित। लोकसभा में ब्रिटिश काल के तीन कानूनों को बदलने के लिए भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और भारतीय साक्ष्य विधेयक पेश किए गए।
- **12 अगस्त :** राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन बिल, 2023 (डीपीडीपी बिल) को संसद के दोनों सदनों से पारित होने के बाद अपनी मंजूरी दी ।
- **13 अगस्त :** प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मध्य प्रदेश के सागर में लगभग चार हजार करोड़ रुपये की रेल और सड़क परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया।
- **14 अगस्त :** स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने राष्ट्र को संबोधित किया। राष्ट्रपति ने कहा "देश ने चुनौतियों को अवसरों में बदला है और प्रभावशाली आर्थिक वृद्धि दर भी दर्ज की है। हमारे अन्नदाता किसानों ने हमारी आर्थिक वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। राष्ट्र उनका ऋणी है।"
- **15 अगस्त :** फ्लाइंग (पायलट) विंग कमांडर श्रेय तोमर को भारतीय सैन्य बलों की सर्वोच्च कमांडर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने वायु सेना पदक से सम्मानित किया, उन्होंने विमान के दोनों इंजनों में आग लगने के बावजूद विंग कमांडर श्रेय तोमर ने विमान को उतारा, उड़ान कौशल को प्रदर्शित करते हुए विनाशकारी हादसे को टालने में सफलता प्राप्त की।
- **16 अगस्त :** अटल बिहारी वाजपेयी की पुण्यतिथि पर राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, पीएम ने दी श्रद्धांजलि, सीएम योगी ने पर राजधानी में लोकभवन स्थित उनकी प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर दी श्रद्धांजलि।
- **17 अगस्त :** जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस का दामन छोड़ DPAP का गठन करने वाले गुलाम नबी आजाद ने कहा कि हमारे हिंदुस्तान में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में इस्लाम 1500 साल पहले आया है, हिंदू धर्म बहुत पुराना है। हिंदुस्तान में सब हिंदू से मुसलमान में कन्वर्ट हुए हैं।
- **18 अगस्त :** उत्तर प्रदेश के वाराणसी में चल रहे चार दिवसीय यूथ 20 सम्मेलन का औपचारिक उद्घाटन हुआ मुख्यमंत्री और केंद्रीय युवा मामले और खेल मंत्री कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।
- **19 अगस्त :** U-20 विश्व चैंपियनशिप में अंतिम पंघाल ने रचा इतिहास, लगातार दो बार U-20 वर्ल्ड खिताब जीतकर बनीं पहली भारतीय महिला पहलवान।
- **20 अगस्त :** लद्दाख के लेह में बड़ा हादसा, खाई में गिरा सेना का वाहन, 9 जवानों की मृत्यु। ■

प्रेरणा विचार

प्रिय पाठकगण आपको यह जानकर हर्ष होगा कि प्रेरणा विचार मासिक पत्रिका द्वारा 25 अक्टूबर 2023 से 5 नवम्बर 2023 के बीच पाठकों के लिए एक ऑनलाइन प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। जिसमें जुलाई 2023 से अक्टूबर 2023 (4 माह) की पत्रिकाओं में से प्रश्न पूछे जाएंगे। आपके पास जुलाई 2023 से प्रेरणा विचार पत्रिका का प्रत्येक अंक पहुंचेगा। जिसे आपको ध्यान से पढ़ना होगा तथा उन्हीं अंकों में से पूछे गए प्रश्नों का सही उत्तर देना होगा। परीक्षा ऑनलाइन आयोजित की जाएगी।

ऑनलाइन परीक्षा दो वर्गों में आयोजित की जायेंगी।

- ♦ वर्ग 1- विद्यार्थी
- ♦ वर्ग-2- सामान्य

- ☞ सभी प्रतिभागियों को प्रतिभागिता पत्र (ई-प्रमाण पत्र) मिलेगा।
- ☞ दोनों वर्गों के प्रथम तीन स्थान पर रहने वाले प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र, पुरस्कार एवं स्मृति चिन्ह दिया जाएगा।

पाठकगण प्रेरणा विचार पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया,'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से हमारी ई-मेल आईडी (prernavichar@gmail.com) या वाट्सएप नम्बर (9354133754) पर भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

हमारा लक्ष्य

बेहतर शिक्षा
बेहतर स्वास्थ्य

एक जनपद-एक मेडिकल कॉलेज की ओर अग्रसर

65 मेडिकल कॉलेज संचालित, 22 मेडिकल कॉलेज निर्माणाधीन

डबल इंजन की सरकार
विकास की दोगुनी रफ़्तार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

RNI No. : UPHIN/2023/84344 Postal Reg No. : DL (DS)-61/MP/2023-24-25

BHAURAV DEVRAS SARASWATI VIDYA MANDIR

- Digital Library
- Atal Tinkering Laboratory
- Well Equipped Laboratories
- All Sports Activities
- Studio for Smart Education
- Value Based Education
- Easy Transport options from most suburbs
- Unique & Innovative Programs
- Modern Resources & Technologies

H-107, Sector-12, NOIDA
E-Mail: bdsvidyamandir@gmail.com
Contact No. 0120-4238317, 9910665195